RNI No.MPHIN/2002/07269

वर्ष-16, अंक-4 जनवरी-मार्च 2018 मूल्य-20/- रुपए

रघुकलश

सामाजिक पत्रिका

RNI No.MPHIN/2002/07269

श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

लाडो अभियान

बाल विवाह न रचें, अपराध से बचें

श्री शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

बाल विवाह अपराध है
बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006 के अनुसार 18 वर्ष से कम उम्र में लड़की तथा 21 वर्ष से कम उम्र में लड़के का विवाह करना कानूनन अपराध है।

बाल विवाह में शामिल सभी व्यक्ति एवं सेवाप्रदाता अपराधी है।
ऐसे विवाह में शामिल होने वाले सभी नाते-रिश्तेदार, मित्र एवं सेवाप्रदाता जैसे धर्मगुरू, मैरिज गार्डन, टेंट हाउस, बैंड-बाजा, सैलून, प्रिंटिंग प्रेस इत्यादि से सम्बन्धित सभी व्यक्ति/ संस्था भी अपराधी की श्रेणी में आते हैं।

दण्ड-कठोर कारावास/ जुर्माना / या दोनों
बाल विवाह करने और करवाने वाले दोषियों को दो वर्ष तक का कठोर कारावास या एक लाख तक का जुर्माना अथवा दोनों का प्रावधान है।

बाल विवाह प्रतिषेध अधिनियम 2006

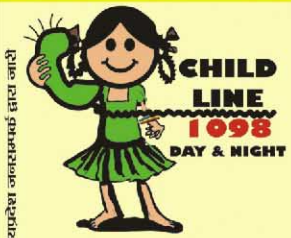

बाल विवाह कानूनी अपराध है

आप बाल विवाह होता पायें तो इसकी सूचना जिला कलेक्टर, स्थानीय पुलिस या महिला बाल विकास विभाग के अधिकारी को तत्काल दें।

सूचनादाता की पहचान गोपनीय रखी जाती है।

संचालनालय महिला सशक्तिकरण, महिला एवं बाल विकास विभाग, मध्यप्रदेश

D-83051/18

जनवरी-मार्च 2018

सुकन्या

रघुकलश

त्रैमासिक सामाजिक पत्रिका

RNI No. MPHIN/2002/07269

वर्ष : 16 अंक : 4 जनवरी-मार्च 2018 मूल्य : रु.20/-

संपादक की कलम से

सोहागपुर रघुवंशी समाज की सराहनीय और अनुकरणीय पहल

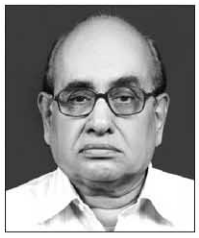

सोहागपुर जिला होशंगाबाद के रघुवंशी समाज ने इस वर्ष जनवरी माह में निर्णय लिया कि मृत्युभोज एक कुरीति है जिसे तत्काल प्रभाव से प्रतिबंधित किया जाएगा। समाज के वरिष्ठ समाजसेवी और पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष चौधरी राजेंद्र सिंह के निवास पर हुई बैठक में सामूहिक निर्णय लिया गया, जिसके तहत समाज में व्याप्त कुरीति मृत्युभोज को पूरी तरह से सीमित कर दिया गया है। इस निर्णय के लिए निश्चित तौर पर सोहागपुर का समग्र रघुवंशी समाज बधाई का पात्र है और उसने जो पहल की है वह सराहनीय व अनुकरणीय है। समाज से कुरीतियों को दूर करने के लिए अब हर स्तर पर पहल की जाना चाहिए और सोहागपुर में जो निर्णय हुआ है वैसा ही निर्णय अन्य स्थानों पर रहने वाले सामाजिक बंधुओं को करना चाहिए। कोई भी निर्णय करना जितना आसान होता है उस पर अमल करना उतना ही मुश्किल होता है। लेकिन सोहागपुर रघुवंशी समाज ने न केवल निर्णय लिया बल्कि उस पर अमल भी किया है। जो निर्णय लिए गए हैं उसके अनुसार अब केवल मृत्युभोज में धार्मिक कर्मकांड, ब्राह्मण-भोज, परिवार एवं पारिवारिक बहन-बेटी व नजदीकी रिश्तेदार ही सम्मिलित होंगे। मृत्युभोज पर अन्य सामाजिक बंधुओं का यहां आना-जाना प्रतिबंधित है। मृत्यु भोज में शोक-संदेश कार्ड बांटना भी प्रतिबंधित किया गया है तथा सीमित पारिवारिक सदस्यों के भोजन के अतिरिक्त सभी रस्में प्रतिबंधित हैं। इस निर्णय के बाद बाबू शंकरलाल पटेल (रघुवंशी) गोत्र गहोरिया तथा स्वर्गीय श्री खुशीलाल जी रघुवंशी (रझोदिया) के पुत्र प्रेमजी, लक्ष्मणजी, रतनजी, धनसिंह जी एवं यशवंत जी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने समाज के निर्णय का पूरी तरह पालन किया। बाबू शंकरलालजी के पुत्र स्वर्गीय श्री नगेंन्द्र सिंह जी का मृत्यु भोज सामाजिक निर्णय के अनुसार हुआ। इसी प्रकार स्व. खुशीलाल जी रघुवंशी के स्वर्गवास के बाद उनके पुत्रों ने भी सामाजिक निर्णय का अनुपालन किया। रघुवंशी समाज सोहागपुर ने जो पहल की है उसका समाज के द्वारा अन्य जिलों व प्रान्तों में भी अनुकरण किया जाना चाहिये। इसके साथ ही दहेज उन्मूलन व सादगीपूर्ण विवाह आदि के लिए भी सामाजिक आंदोलन चलाया जाना नितान्त जरुरी है।

-अरुण पटेल

श्रीराम रघुवंशी

राहुल

सीट कव्हर हाऊस

निर्माता: कार सीट कव्हर एवं कार डेकोरेशन

:: मोबाइल ::
9425302557

प्लॉट नं. 196, शॉप नं. 30, कामधेनु कॉम्पलेक्स के पीछे, जोन-1, एम. पी. नगर, भोपाल, फोन: 0755-4285551

राष्ट्रीय अध्यक्ष की कलम से

समाज की बेटी को न्याय मिलने तक जारी रहेगा संघर्ष

प्रतिवर्ष रघुवंशी समाज रामनवमी का पर्व बड़े धूमधाम से मनाता है लेकिन इस वर्ष का रामनवमी पर्व जहां तक संभव हुआ समाज ने सादगी व दुख के साथ मनाया, क्योंकि एक दुखद प्रसंग इसमें जुड़ गया। यह प्रसंग था रघुवंशी समाज के उदयपुरा निवासी चंदनसिंह रघुवंशी की बेटी प्रीति रघुवंशी द्वारा आत्महत्या करने का। राज्य सरकार के एक वरिष्ठ मंत्री रामपाल सिंह के बेटे गिरिजेश से आर्य समाज मंदिर नेहरु नगर भोपाल में प्रीति ने पिछले वर्ष शादी की थी, जिसे मंत्री रामपाल सिंह ने स्वीकार नहीं किया। यहां तक कि उन्होंने अपने बेटे गिरिजेश की शादीशुदा होने के बाद भी सगाई करा दी जिससे व्यथित होकर प्रीति ने आत्महत्या कर ली। इस घटना का सबसे दुर्भाग्यजनक पहलू यह है कि जब मैं समाज को सामाजिक पत्रिका के माध्यम से सम्बोधित कर रहा हूं उस समय तक पुलिस ने प्रीति के परिजनों की शिकायत पर कोई रिपोर्ट थाने में दर्ज नहीं की। पिछले साल का भी एक दुखद प्रसंग है जिसमें अशोकनगर जिले के समाज के ही सतीश रघुवंशी ने वरिष्ठ अधिकारियों की प्रताड़ना से परेशान होकर आत्महत्या कर ली थी। उस समय अशोकनगर में रघुवंशी समाज के लोगों ने हजारों की संख्या में एकत्रित होकर ज्ञापन देते हुए इस समूचे मामले की सीबीआई से जांच कराने की भी मांग की थी और प्रदर्शन किया था। इसमें मेरे साथ ही अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा के महासचिव उमाशंकर रघुवंशी भी मौजूद थे। अभी तक इस मामले में राज्य सरकार ने कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं की और न ही सीबीआई जांच का आदेश हुआ। चूंकि आत्महत्या के मामले में वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों पर ही संदेह की सुई घूम रही थी इसलिए सीबीआई जांच नितान्त जरुरी है। इसके साथ ही समाज के अन्य लोगों के साथ भी पूर्व में कुछ घटनाएं हुई हैं जिन पर भी कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हुई है। मेरा समाज के सभी लोगों से अनुरोध है कि एकजुटता का परिचय दें क्योंकि एकता ही समाज की सबसे बड़ी ताकत है। हमारे संगठन ने यह निर्णय लिया है कि जब तक समाज की बेटी प्रीति को न्याय नहीं मिलेगा और कड़ी कानूनी कार्रवाई नहीं होगी तब तक समाज का आंदोलन निरन्तर जारी रहेगा। होशंगाबाद, सिवनी-मालवा, सोहागपुर, पीथमपुर, धार, छिंदवाड़ा, गुना, अशोकनगर सहित प्रदेश के लगभग 22 जिलों के सामाजिक बंधुओं ने अपने-अपने स्तर पर कैंडल मार्च, विरोध प्रदर्शन और रामपाल सिंह का पुतला जलाकर दोषियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई कर मामले की सीबीआई जांच कराने और रामपाल सिंह को सरकार से हटाने के लिए ज्ञापन सौंपे। मैं रघुवंशी समाज के सोहागपुर के साथियों को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को काले झंडे दिखाकर प्रीति को न्याय दिलाने की मांग की। प्रदर्शनकारियों पर पुलिस ने जो बर्बर लाठीचार्ज किया है और जिस ढंग से रघुवंशी समाज के लोगों के घरों की पुलिस ने घेराबंदी की उसकी मैं कड़ी निंदा करता हूं। कुछ प्रदर्शनकारियों को जेल में भी बंद किया गया। पुलिस और प्रशासन का यह रवैया पूरी तरह से तानाशाहीपूर्ण है, इसकी जितनी निंदा की जाए कम है। राष्ट्रीय अध्यक्ष की हैसियत से मैंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा अध्यक्ष अमित शाह, मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पत्र भेजकर समाज की मांगों पर तत्काल प्रभावी कार्रवाई करने की मांग की। मेरी समस्त सामाजिक बंधुओं से अपील है कि वे एकजुट हों और चंदनसिंह रघुवंशी व उनके परिजनों को पूरा संबल बंधायें और उनकी इस लड़ाई में कंधे से कंधा मिलाकर साथ दें। समाज का यह दायित्व है कि वह उस समय तक चैन से न बैठे जब तक इस परिवार को न्याय नही मिल जाता।

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा

भगवान राम का होम एड्रेस

रमेश रंजन त्रिपाठी

भगवत् भक्तों की इच्छा होती है कि वे अपने प्रभु का नित्य निरंतर स्मरण करते रहें। अपने आराध्य के सन्निकट रहें। सर्वदा उनका आशीर्वाद और कृपा प्राप्त करते रहें। परंतु इसका उपाय क्या है? निर्गुण निराकार ब्रम्ह सर्वव्यापक हैं। परंतु भक्तों को सगुण उपासना के बिना आनंद ही नहीं मिलता। तो, पूरे समय क्या मंदिर में जाकर बैठें? फिर जीवन कैसे चलेगा? सन्यासी तो संसार से विरक्त हो सकता है किंतु गृहस्थ क्या करे? इन प्रश्नों का उत्तर गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस के अयोध्याकांड में सुंदर प्रतीकों के माध्यम से दिया है।

प्रसंग है वनवासकाल में माता जानकी और अनुज लक्ष्मण के साथ प्रभु श्रीराम का महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचकर अपने रहने के लिए उचित स्थान बताने का निवेदन करना। गोस्वामी जी ऐसे अवसर को कैसे छोड़ सकते थे? उन्होंने वाल्मीकिजी के श्रीमुख से उन सद्गुणों का बखान कराया है जिन्हें अपनाकर रामभक्त अपने हृदय और मन के मंदिर को इष्ट का निवास बना सकते हैं। ऐसा वर्णन करते समय तुलसी बाबा यथार्थ में रामभक्तों को आचरण संहिता का उपदेश दे रहे हैं।

तुलसी बाबा ने श्रीराम और वाल्मीकि मुनि के संवादों को ज्ञान, विनय, प्रेम, श्रद्धा और भक्तिभाव में आकंठ डूबकर लिखा है। रामजी से वाल्मीकि कहते हैं **'जहँ न होहु तहँ देहु कहि तुम्हहि देखावौं ठाउँ'**।(जहाँ आप न हों, वह स्थान बता दीजिए। तब मैं आपके रहने के लिए स्थान दिखाऊँ)। ऋषि की गूढ़ बात सुनकर राघव सकुचाकर मुस्कुरा देते हैं। तब मुनिवर मानवमात्र के कल्याण के लिए श्रीरामचंद्र जी को उचित निवास बताने के बहाने उनकी भक्ति का सुगम उपाय बताते हैं।

गोस्वामी जी ने भक्ति की शुरुआत देह के स्तर से करने का आव्हान किया है। वे शरीर की कर्मेंद्रियों एवं ज्ञानेंद्रियों के सदुपयोग का वर्णन करते हैं। तत्पश्चात नित्य एवं आवश्यक कर्मों की विधि बताते हैं। इससे आचरण फिर मानसिकता और स्वभाव में परिवर्तन का संकेत करते हैं। इस अवस्था के बाद ईश्वर के प्रति समर्पण का भाव उदित होगा जो क्रमशः अनासक्ति, अनन्यता, सदाचार, सेवाभाव, विरक्ति, निष्कामता के उपरांत भक्त को भगवान राम के समक्ष संपूर्ण शरणागति की प्राप्ति करा देगा। इस पूरे सिलसिले को गोस्वामी जी के शब्दों में देखते हैं।

सुनहु राम अब कहउँ निकेता, जहाँ बसहु सिय लखन समेता।
जिन्ह के श्रवन समुद्र समाना, कथा तुम्हारि सुभग सरि नाना।
भरहिं निरंतर होहिं न पूरे, तिन्ह के हिय तुम्ह कहुँ गृह रूरे।
लोचन चातक जिन्ह करि राखे,रहहिं दरस जलधर अभिलाषे।

निदरहिं सरित सिंधु सर भारी,
रूप बिंदु जल होहिं सुखारी।
तिन्ह कें हृदय सदन सुखदायक,
बसहु बंधु सिय सह रघुनायक।
जसु तुम्हार मानस बिमल हंसिनि जीहा जासु।
मुकताहल गुन गन चुनइ राम बसहु हियँ तासु।
प्रभु प्रसाद सुचि सुभग सुबासा, सादर जासु लहइ नित नासा।
तुम्हहि निबेदित भोजन करहीं, प्रभु प्रसाद पट भूषन धरहीं।
सीस नवहिं सुर गुरु द्विज देखी, प्रीति सहित करि विनय बिसेखी।
कर नित करहिं राम पद पूजा, राम भरोस हृदयँ नहिं दूजा।

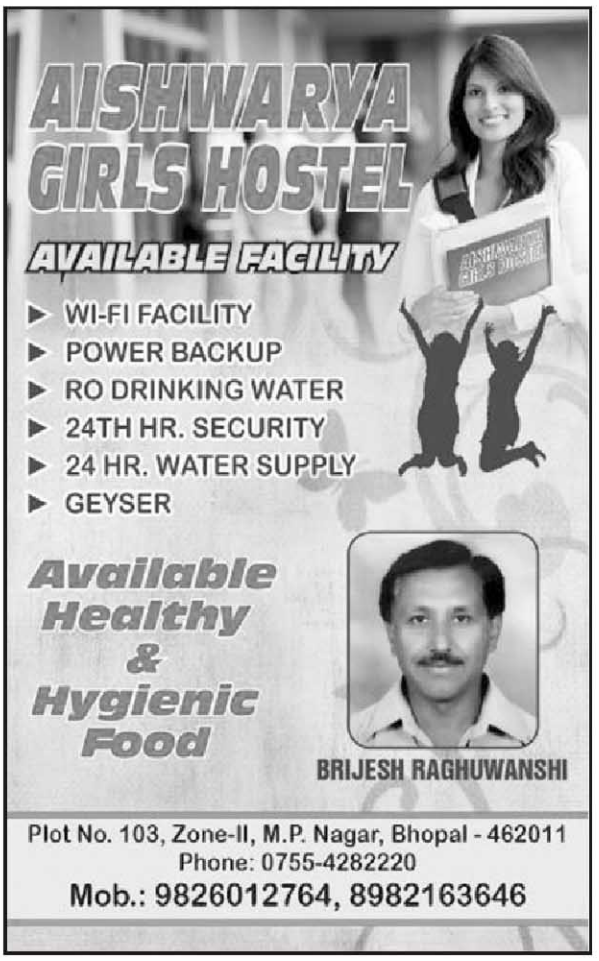

चरन राम तीरथ चलि जाहीं, राम बसहु तिन्ह के मन माहीं।

सर्वप्रथम मुनिवर ने भगवान राम के समक्ष सीता जी और लक्ष्मण सहित निवास स्थान बताने के बहाने शारीरिक स्तर पर कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों की शुद्धता का उपाय समझाया है। वे कहते हैं कि अपने कानों को समुद्र बना लें जो रामकथा रुपी नदियों से निरंतर भरते रहने पर भी तृप्त नहीं होता है। आँखों को चातक की भाँति टकटकी लगाकर केवल प्रभु के रूप के दर्शन की अभिलाषा करें। अपनी जिह्वा को हंसिनी बनाकर श्रीराम के यशरूपी निर्मल मानसरोवर से गुणरूपी मोतियों को चुगते रहें। नासिका से ईश्वर के पवित्र और सुगंधित पुष्प-प्रसाद को नित्य सादर ग्रहण करें। भगवान को अर्पित किया हुआ प्रसादस्वरूप भोजन और वस्त्राभूषण धारण करें। गुरु, देवता और विप्र के समक्ष विनयपूर्वक सिर झुकाएँ। हाथों से श्रीराम प्रभु के पादारविंद की पूजा करें, अपने चरणों को राम जी के तीर्थ जाने में लगाएँ और एकमेव भगवान राम पर भरोसा रखें। ऐसा करने पर मन में राम जी का वास अवश्यम्भावी है।

दैहिक पवित्रता के उपरांत गोस्वामी जी प्रतिदिन करने योग्य कर्मों का वर्णन करते हैं-

मंत्रराज नित जपहिं तुम्हारा, पूजहिं तुम्हहि सहित परिवारा।
तरपन होम करहिं बिधि नाना, बिप्र जेवाँइ देहिं बहु दाना।
तुम्ह तें अधिक गुरहि जियँ जानी, सकल भायँ सेवहिं सनमानी।
सबु करि मागहिं एक फलु राम चरन रति होउ,
तिन्ह के मन मंदिर बसहु सिय रघुनन्दन दोउ।

तुलसीदास जी समझा रहे हैं कि नित्य मंत्रों के राजा 'राम' का जप करिए। श्रीराम जी की परिवार सहित पूजा करें। अनेक प्रकार से तर्पण, हवन करें, ब्राम्हणों को भोजन कराएँ दान दें तथा गुरु को भगवान से भी बड़ा मानकर सेवा करें। और इन सभी कर्मों का एक ही फल राघवेंद्र महाराज के चरणों में प्रीति माँगें। तब आपके मन के मंदिर में राघव माता जानकी के साथ निवास करेंगे।

इतना करने से मनुष्य के आचार विचार और फिर स्वभाव में बदलाव आने लगेगा। तुलसी बाबा कहते हैं-

काम क्रोध मद मान न मोहा, लोभ न छोभ न राग न द्रोहा।
जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया, तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया।
सब के प्रिय सब के हितकारी, दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी।
कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी, जागत सोवत सरन तुम्हारी।
तुम्हहि छाड़ि गति दूसर नाहीं, राम बसहु तिन्ह के मन माहीं।

गोस्वामी जी वाल्मीकि मुनि के माध्यम से कह रहे हैं कि भक्त के मन से काम, क्रोध, मद, अभिमान, मोह, लोभ, क्षोभ, राग, द्वेष, कपट, दम्भ और माया दूर होने लगते हैं ताकि रघुराज वहाँ पधार सकें। प्रभु के सेवक सबके प्रिय और सबके हितैषी होते हैं। उनके लिए प्रशंसा और निंदा एक समान होती है। वे विचारपूर्वक सत्य और प्रिय वचन बोलते हैं, सोते जागते श्रीराम की शरण में रहते हैं। उनके लिए राम जी के अलावा कोई आश्रय नहीं होता।

रघुनन्दन के सेवक परायी संपत्ति देखकर हर्षित एवं परायी विपत्ति देखकर दुखी हो जाते हैं।

जननी सम जानहिं परनारी, धनु पराव बिष तें बिष भारी।
जे हरषहिं पर संपति देखी, दुखित होहिं पर बिपति बिसेखी।

जिन्हहि राम तुम्ह प्रानपिआरे, तिन्ह के मन सुभ सदन तुम्हारे।

फिर रामानुरागी के मन में अनन्य, सदाचार, सेवा, विरक्ति और निष्काम्य का भाव उदित होता है।

स्वामि सखा पितु मातु गुर जिन्ह के सब तुम्ह तात,
मन मंदिर तिन्ह कें बसहु सीय सहित दोउ भ्रात।

अवगुन तजि सब के गुन गहहीं, बिप्र धेनु हित संकट सहहीं।
नीति निपुन जिन्ह कइ जग लीका, घर तुम्हार तिन्ह कर मनु नीका।
गुन तुम्हार समुझइ निज दोसा, जेहि सब भाँति तुम्हार भरोसा।
राम भगत प्रिय लागहिं जेही, तेहि उर बसहु सहित बैदेही।
जाति पाँति धनु धर्म बड़ाई, प्रिय परिवार सदन सुखदाई।
सब तजि तुम्हहि रहइ उर लाई, तेहि के हृदयँ रहहु रघुराई।
सगु नरकु अपबरगु समाना, जहँ तहँ देख धरें धनु बाना।
करम बचन मन राउर चेरा, राम करहु तेहिं के उर डेरा।

रामभक्त के लिए स्वामी, सखा, पिता, माता, गुरु सबकुछ भगवान ही होते हैं। वे अवगुणों का त्याग कर केवल गुणों को ग्रहण करते हैं। विप्र और गाय के लिए संकट सहते हैं। मर्यादा का पालन करने वाले नीति निपुण होते हैं। वे गुणों को ईश्वर की देन और दोषों को अपना मानते हैं। वह सभी प्रकार से राम जी के भरोसे होता है। उसे रामभक्त प्यारे लगते हैं। राम प्रभु का सेवक जाति, पाँति, धन, धर्म, बड़ाई, प्यारा परिवार और सुखद घर को त्याग कर हृदय में केवल अपने इष्ट को धारण करता है। उसके लिए स्वर्ग, नर्क, मोक्ष समान होते हैं क्योंकि वह सर्वत्र धनुष बाण धारण किए हुए श्रीराम को ही देखता है। वह मन, वचन और कर्म से रघुनाथ जी का दास होता है। ऐसा रामभक्त कभी कुछ नहीं चाहता, उसे भगवान से स्वाभाविक प्रेम होता है। उसका हृदय ही सच्चे अर्थों में श्रीराम का घर है-

जाहि न चाहिअ कबहुँ कछु तुम्ह सन सहज सनेहु,
बसहु निरंतर तासु मन सो राउर निज गेहु।

वाल्मीकि जी ने ऐसे अनन्य भक्त के मन को राम जी का निज निवास घोषित किया है। पूरे प्रसंग में तुलसी बाबा ने राम जी के निवास के लिए चौदह स्थान बताए हैं। भक्तों के लिए कलियुग में इतनी साधना सरल प्रतीत नहीं होती है इसलिए तुलसी बाबा ने आश्वस्त किया है कि इनमें से किसी एक अवस्था को प्राप्त कर लेने पर भी रामजी सेवक के अंतर्मन में अपना डेरा डाल लेंगे। तो विलम्ब क्यों? आज और अभी से क्यों न इन उपायों को अपनाकर अपने मानव जीवन को सफल बना लें !

-------■ ■-------

सीता ज्यादा राख हुई अग्नि परीक्षा की इच्छा से

मनोज कुमार श्रीवास्तव

आभा बोधिसत्व 'सीता नहीं मैं' शीर्षक अपनी कविता में पूछती हैं कि ''जितना नहीं झुलसी थी मैं/अग्नि परीक्षा की आंच से/उससे ज्यादा राख हुई हूं मैं/तुम्हारी अग्नि परीक्षा की इच्छा से/मुझे सती सिद्ध करने की तुम्हारी सदिच्छा से।'' अपर्णा भटनागर अपनी कविता ''राम से पूछना होगा'' में कहती हैं कि ''और रख देता है चाक पर/अग्नि परीक्षा लेता/तू जलती है नेह की दीवट में/अब्दों से दीपशिखा बन/दीप ये जलन क्या सीता रख गई ओठों पर?/राम से पूछना होगा!'' गीत चतुर्वेदी उभयचर-25 नामक कविता में कहते हैं ''जिस तरह दो सीताएं थीं एक अग्नि में छिपी हुई/उसी तरह दो राम हुए हों/और चूंकि राम की अग्नि परीक्षा कभी हुई ही नहीं/सो कभी लौट ही न पाया हो अग्नि में छुपा दूसरा राम/ऐसे ही मैं जो यहां बैठा हूं दरअसल मैं हूं ही नहीं एक और मैं था जो किसी समय जाकर आग में छुप गया/और अब बुलाने पर भी आ नहीं रहा।'' अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने लिखा था- ''सुरुचिमय है जिसकी चित्त वृत्ति/कुरुचि जिसको सकती है छू न/हृदय है इतना सरस दयार्द्र/तोड़ पाते कर नहीं प्रसून/करेगा उस पर शंका कौन/क्यों न उसका होगा विश्वास/यही था अग्नि परीक्षा मर्म/हो न जिससे जग में उपहास'' अग्नि परीक्षा के इस रुपक ने हरिवंशराय बच्चन को भी बार-बार उकसाया है- ''यह मानव की अग्नि परीक्षा/बढ़ती हैं लपटें भयकारी/अगणित अग्नि-सर्प-सी बन-बन/गरुण ब्यूह से धंसकर इनमें/इनका कर स्वीकार निमंत्रण।'' या ''ले ली जीवन ने अग्नि परीक्षा मेरी/भीतर की तृष्णा जब चीखी/सागर, बादल, पानी/बाहर की दुनिया थी लपटों ने घेरी/ ले ली जीवन ने अग्नि-परीक्षा मेरी।''

लेकिन इन कवि-वक्तव्यों के बाद भी वाल्मीकि रामायण में अग्नि परीक्षा की बात है ही नहीं। न राम ने ली है और न सीता ने दी है। परीक्षा शब्द वाल्मीकि के विवरण में आया ही नहीं। उनके हिंदी अनुवाद में आया है। इसलिए आभाजी किसी और बात से राख हो लें। राम से अग्नि-परीक्षा के बारे में पूछने पर अर्पणा जी क्या पायेंगी? गीत-चतुर्वेदी जिन दो छायाओं की बात करते हैं, उन दो छायाओं की बात वाल्मीकि ने नहीं की है। हरिऔध ने अग्नि-परीक्षा की विवेचना इस रुप में है कि 'जग में उपहास' को निवारित करने के लिए यह हुआ किन्तु वाल्मीकि इसकी जगह ''तीनों लोकों के प्राणियों के मन में विश्वास दिलाने के लिए ''राम द्वारा एकमात्र सत्य का सहारा लेकर अग्नि में प्रवेश करती हुई वैदेही को रोकने की चेष्टा नहीं करना'' बताते हैं। ध्यान दें कि राम सिर्फ पृथ्वी के लोगों के स्टैंडर्ड के हिसाब से विश्वास की बात नहीं कर रहे, वे उन लोगों के मानकों के हिसाब से भी बात कर रहे थे जिनका स्तर भूलोक के निवासियों से ज्यादा या कम है। सीता की कोई स्पर्धा पृथ्वी की स्त्रियों से नहीं है। सीता त्रैलोक्य विजयी जगज्जननी हैं। सीता के प्रतिमान उत्तीर्ण करना त्रिलोक के लिए भी दुर्लभ है। सीता किसी कथित धोबी के मान से जांची नहीं जायेंगी। सीता की पवित्रता की कोई दुनियादार समीक्षा संभव नहीं। सीता प्रकृति के न्याय से ही समीक्षित होंगी। वह भी उनके स्वयं के निर्णय से। सीता यही कहती हैं कि ''यदि भगवान सूर्य, वायु, दिशाएं, चन्द्रमा, दिन, रात, दोनों संध्याएं पृथ्वी तथा अन्य देवता भी मुझे शुद्ध चरित्र से युक्त जानते हों तो अग्नि देव मेरी सब ओर से रक्षा करें।'' अग्नि पंचमहाभूतों में से ही एक हैं। वेदवती स्वयं को अग्नि में स्वेच्छया भस्म कर चुकी है। किन्तु वैदेही अग्नि में भस्म होने नहीं जा रहीं। वहां अग्निदेव रक्षा के लिए आहूत और आमंत्रित किए जा रहे हैं। सीता और अग्नि जेसन श्नीडरमैन की कविता में यों प्रस्तुत हुए- Do you remember sita?.....Do yoy remember how she walked through fire to prove her purity, even though everyone knew of the curse on Ravana? How the people said the fire did't matter because fire was brother of her mother, Earth? How Ram was as the face of his people as he has been strong on the face of Ravana? यह कविता तो अग्नि की साक्षी पर भी इस आधार पर विश्वास न करने वाले लोगों की कथा कहती है कि अग्नि सीता की जननी पृथ्वी के बंधु हैं। तो लोग जिन्हें कहना है, कुछ भी कहेंगे। कमला भसीन और ऋतु मेनन जैसी फेमिनिस्ट लेखिकाएं कहेंगी : ----With Sita as our ideal, can Sita (Widow burning) be far behind. लेकिन वे यह नहीं देखेंगी कि सीता अग्नि से अपनी जीवन-रक्षा की प्रार्थना करती हैं। खुद को मार डालने की नहीं। राम के वचन सुनकर सीता दुख के आवेश में मरने का निश्चय कर तो लेती हैं, लेकिन वे चिता सजते सजते मृत्यु का विचार त्याग भी देती हैं और जीवन-रक्षा की प्रार्थना अग्निदेव से करती हैं। यह प्रार्थना वे अपने मूल्यों, सिद्धान्तों, आदर्शों, पवित्रताओं के आत्म विश्वास पर करती हैं। इसलिए सीता और सती में उतना ही फर्क है जैसी जिजीविषा और आत्म-विनाशेच्छा में। इसलिए यह अग्नि जीवनोन्मुख अग्नि है। रिक रिचर्डसन ने 'द सन ऑफ नेपच्यून' में सही ही लिखा है- Only the fire of life can melt the chains of death. सीता जीवन की ही ओर प्रवृत्ति दिखाती हैं। यदि वह आह्वान है तो जीवन की प्रतिष्ठा का आह्वान है। सीता किसी तरह का पलायन नहीं कर रहीं। वे अग्नि

में छिप नहीं रहीं। रावण की कैद में भी उन्हें आत्महत्या का विचार आया था। तब भी उन्होंने की नहीं। अब भी उन्हें यह विचार आया है किन्तु अभी भी वे संभल जायेंगी। वचन, काया और मन से वे राम को एकाग्रता: समर्पित रही हैं तो उन पर कोई विपत्ति कैसे आ सकती है? ''गति'' की जो बात राम यहां सुंदरकांड में कह रहे हैं, 'गति' की वही बात सीता वहां लंकाकांड में कथित अग्नि परीक्षा के ठीक सामने कहेंगी। दो बार 'गति' की बात वे करेंगी। एक राम के साथ उनका जो अपना नाता है और दूसरा अग्नि के प्रति जो सबकी गति जानता है: ''जौं मन बच क्रम मम उर माहीं/तजि रघुबीर आन गति नाहीं/तौ कृसानु सब कैं गति जाना/मो कहुं होउ श्रीखंड समाना।'' राम आश्वस्त हैं कि 'वचन कॉय मन मम गति जाही' को कुछ नहीं हो सकता। सीता आश्वस्त हैं कि ''मन बच क्रम'' वे राम की ही हैं। यह प्रसंग दोनों की एक दूसरे के प्रति अगाध आस्था का सूचक है। तो इसे एक-दूसरे के प्रति संदेह का प्रसंग बना दिया गया। तुमहिं मम गति गिरिधर गोपाल। इसी विश्वास के सहारे प्रहलाद अग्नि की गोद में बैठ गया था और निरापद निकल आया। तुलसी ने उस सम्बंध में भी 'गति' की बात की थी- 'तुलसी गति प्रहलाद की समुझि प्रेम पथ गूढ़'- प्रीति राम-नाम ही सों, रति राम-नाम ही सों, गति राम-नाम ही की बिपति हरनि। लोकसाक्षी अग्नि प्रकट होकर राम से वही ''मन, वाणी, बुद्धि, नेत्र की गति अथवा आश्रय की बात करते हैं-''उत्तम आचार वाली इस शुभलक्षणा सती ने मन, वाणी, बुद्धि अथवा नेत्रों द्वारा भी आपके सिवा किसी दूसरे पुरुष का आश्रय नहीं लिया।'' सूर्यवंशी राम में सीता वैसे ही विश्वास करती हैं, जैसे सूर्य में। न केवल इसलिए कि वे इस सूर्य को देख पाती थीं जबकि रावण नहीं देख पाया बल्कि इसलिए कि इसी सूर्य की रोशनी से उन्होंने सब कुछ देखा है। इसीलिए ऊपर उद्धृत वाल्मीकीय रामायण में सीता सबसे पहले भगवान अग्नि-प्रसंग के बाद राम एक बार फिर कहते हैं- ये मुझसे सूर्य की ही बात करती हैं। उसी तरह अभिन्न हैं जैसे सूर्य से उनकी प्रभा। जब अग्नि उन्हें अपनी गोद में लेकर प्रकट होते हैं, तब वाल्मीकि कहते हैं- 'सीता प्रातःकाल के सूर्य की भांति अरुणपीत कांति से प्रकाशित हो रही थीं।'

इसका अर्थ यह भी है कि स्त्री की पवित्रता की कोई पारिवारिक, सामाजिक या सांस्कृतिक कसौटी नहीं है। वह पवित्रता प्राकृतिक है। इसलिए भगवान सूर्य, वायु, दिशाएं, चन्द्रमा, दिन, रात, दोनों संध्याएं, पृथ्वी देवी के ज्ञान की बात सीता ने की। सीता वेद का या ऋषि मुनियों का उल्लेख नहीं करती। सीता अपने कुलगुरु का या राम के कुलगुरु का भी कोई उल्लेख नहीं करतीं। सीता की पवित्रता लोक और शास्त्र की मर्यादा नहीं है। वह एक नैसर्गिक पवित्रता है। किसी भी स्त्री का निर्णय-निकष प्रकृति ही हो सकती है। यह योग्यता किसी भीड़ के पास नहीं है। जो किसी औरत को चरित्रहीन घोषित कर उस पर पत्थर फेंकती है। Stoning और Lasting -पत्थर फेंकना या चाबुक मारना किसी संस्कृति या सभ्यता में ऐसे डर हो सकते हैं जिनके जरिए स्त्री को संनिष्ठ बनाया जाता हो। लेकिन वाल्मीकि की सीता का यह अग्नि-प्रसंग सिर्फ यह स्थापित करता है कि स्त्री की पवित्रता प्राकृतिक और दिव्य है। अपने भीतर की दिव्यता की वर्जना नहीं, स्थापना इस अग्नि प्रसंग का लक्ष्य है। इसलिए 117वां सर्ग जो सीता के अग्नि प्रवेश के तत्काल बाद आया है, में देवताओं का आगमन तथा राम-सीता दोनों की भगवत्ता का प्रतिपादन है। यहां देवता राम को बताते हैं कि ''सीता साक्षात् लक्ष्मी हैं और आप भगवान विष्णु हैं।'' राल्फ वाल्डो इमर्सन को याद करें जो कहता था : Every man is a divinity in disguise, a god playing the fool. जेम्स फाउस्ट कहता था : It is a denial of the divinity within us to doubt our potential and possibilities. जिद्दू कृष्णमूर्ति तो कहते थे - (Man) is a living plume of fire, raying out upon the world the Divine love which fills his heart. सीता की कोई बाहरी परीक्षा नहीं हो सकती। सीता की पवित्रता प्रकृति है, समाज का निर्देश नहीं। सीता यदि अपनी अनन्य गति की बात करती हैं तो इसलिए नहीं कि उन पर किसी का दबाव या प्रभाव है। सीता की नैसर्गिक पवित्रता में ही उनकी दिव्यता है। इसलिए अग्नि प्रज्वलित होने के पूर्व सीता राम से कहती भी हैं : ''सदाचार के मर्म को जानने वाले देवता! राजा जनक की यज्ञभूमि से आविर्भूत होने के कारण ही मुझे जानकी कहकर पुकारा जाता है। वास्तव में मेरी उत्पत्ति जनक से नहीं हुई है। मैं भूतल से प्रकट हुई हूं।'' अग्नि-प्रसंग के जरिए राम और सीता के मानवीय अस्तित्व और दिवयत्व के बीच का फर्क कलैप्स कर जाता है। प्रतिबिम्ब जल जाता है, बिम्ब शेष रह जाता है। लंका के नागरिक जिन्हें साधारण नर-नारी समझ रहे थे, वे अपनी भगवत्ता में इस प्रसंग के जरिए प्रकट होते हैं। सीता स्वयं अग्नि शिखा हैं। इसलिए उन्हें अग्नि का भय नहीं है। तुलसी के यहां अग्नि के प्रबल होने पर वे प्रसन्न होती ही बताई गई हैं : ''पावक प्रबल देखि वैदेही/हृदयँ हरष नहिं भय कछु तेही''। राम अग्नि-प्रसंग के बाद कहते भी हैं : ''मैथिली प्रज्वलित अग्निशिखा के समान दुर्धर्ष तथा दूसरे के लिए अलभ्य हैं।'' इसलिए सीता जब अग्नि में प्रवेश करती हैं तो उनकी अग्निधर्मा प्रकृति ही उद्घाटित होती है। यह मेटाफर नारी के द्वारा खुद को आग में झोंक देने का मेटाफर नहीं है, यह तो सूर्य और अग्नि के तेज को धारण करने वाली मानवेतर ऊर्जा का मेटाफर है : बर्कान्स ने एक-दूसरे प्रसंग में कहा है : Firewalking is a symbol which reminds us that being a mere human is not so 'mere; राबिन्स ने कहा : The firewalk is only a metaphor for what we think we cannot do. And once you've walked on fire, a lot of impossibilities become possible. केन काडिगन ने कहा : The firewalk is a key that can unlock the door to our true selver.

तुलसी ने ''प्रभु के वचन सीस धरि सीता'' के द्वारा कुछ गड़बड़ कर दी जिससे लोगों को सीता के भीतर की अग्नि का अनुमान कर सकने में बाधा हुई। सीता ने राम को टूट कर प्यार किया है, लेकिन जब भी सुनाने की बारी आई है तो उन्होंने बख्शा नहीं है। मुझे यह

देखकर बड़ा प्रीतिकर लगता है कि सीता के कड़वे वचन सुनकर राम कभी भी बौखलाए नहीं हैं और उन्होंने उन्हें हमेशा सही स्पिरिट में लिया है। जब वनगमन की बात आई तो सीता ने राम को कहा : '' राम आप मुझे ओछी समझकर यह क्या कह रहे हैं? आपकी ये बातें सुनकर मुझे बहुत हंसी आती है। आपने जो कुछ भी कहा है, वह अस्त्र शस्त्रों के ज्ञाता वीर राजकुमारों के योग्य नहीं है। वह अपयश का टीका लगाने वाला होने के कारण सुनने योग्य भी नहीं है। तीसवें सर्ग में वे और कटु हो जाती हैं : राम! क्या मेरे पिता ने आपको जामाता के रुप में पाकर कभी यह भी समझा था कि आप केवल शरीर से ही पुरुष हैं, कार्यकलाप से तो स्त्री ही हैं।'' राम तब भी उन्हें दोनों हाथों से संभालकर हृदय से लगाते हैं। एक पल को भी उनमें कोई मनोमालिन्य नहीं आता। अग्नि-प्रसंग के समय भी सीता बहुत खरा बोलती हैं : वीर! आप ऐसी कठोर, अनुचित, कर्णकटु और रुखी बात मुझे क्यों सुना रहे हैं। जैसे कोई निम्न श्रेणी का पुरुष निम्न श्रेणी की ही स्त्री से न कहने योग्य बातें भी कह डालता है, उसी तरह आप भी मुझसे कह रहे हैं : नृपश्रेष्ठ! आपने ओछे मनुष्य की भांति केवल रोष का अनुसरण करके मेरे शील-स्वभाव का विचार छोड़कर केवल निम्न कोटि की स्त्रियों के स्वभाव को ही अपने सामने रखा है।'' इसलिए यह 'सीस धरि' जैसी बात नहीं थी। यह तो सीता की अपनी अग्नि और अपना तेज था जो अपने पति का भी प्रत्याख्यान करता है। तुलसी ''सिर धरि आयसु करिय तुम्हारा/परम धरम यह नाथ हमारा'' पहले भी कहलवा चुके हैं। लेकिन सीता सब कुछ शिरोधार्य ही नहीं करतीं। वे सिर ऊंचा भी करती हैं। उनका नाम सीता होने का अर्थ यह नहीं कि वे शीतल हैं, उसका अर्थ यही है कि वे अच्छे अच्छों को ठंडा कर दें। तो अग्निदेव भी उनके सामने शीतल हो जाते हैं। लेकिन अग्निदेव राम के सामने कोई नम्रता नहीं दिखाते। उनका आखिरी वाक्य आदेशात्मक है : ''मैं आपको आज्ञा देता हूं, आप इससे कभी कोई कठोर बात न कहें।' (युद्धकांड, श्लोक 10) राम यहां फिर प्रसन्न मन से, आनंद के आंसू छलकाते नेत्रों से बात करते हैं। राम डांट का कभी बुरा नहीं मानते। पत्नी की खरी-खोटी का तो बिलकुल भी नहीं। वे अपनी आलोचना को कभी इशू नहीं बनाते।

अग्नि को इस प्रसंग में वाल्मीकि ने लोकसाक्षी कहा है। फिजियन द्वीपों की सवाऊ जाति में, शियाओं में, ग्रीस व बुल्गारिया के पूर्वी आर्थोडॉक्स ईसाइयों में, कालाहारी मरुस्थल की बुशमैन जाति में संघयांग देदारी नामक उत्सव में, बाली की लड़कियों में, ताओवादियों और जापानी बौद्धों में, पोलीनेशिया के आदिवासियों में, हिंदुओं में अग्नि को लोकसक्षी के रुप में माना भी गया है। सीता की लोकग्राह्यता का राम का तर्क निराधार नहीं है। फायरवार्किंग के मामलों में एमिल दुर्खीम कहते हैं कि यह सामूहिक समरसता पैदा करता है : Emile Durkheim attributed this affect to the theorized notion of collective effervescence, whereby collective arousal result in a feeling of togetherness and assimilation. स्पेन में सान पेड्रो मान्रिक गांव में अग्नि से गुजरने की प्रथा के एक वैज्ञानिक अध्ययन में ऐसा करने वाले व्यक्तियों और उन्हें देखने वालों की हार्ट-रेट रिद्म्स में सिंक्रोनाइजेशन देखा गया। इसलिए वाल्मीकि ने सीता के अग्नि में समाने को ''देखने वालों'' पर विशेष बल दिया है। वे लिखते हैं और 6 श्लोकों में लिखते हैं : '' बालकों और वृद्धों से भरे हुए वहां के महान जनसमुदाय ने उन दीप्तिमती मैथिली को जलती आग में प्रवेश करते देखा। तपाए हुए नूतन सुवर्ण की सी कान्तिवाली सीता आग में तपाकर शुद्ध किए गए सुवर्ण के आभूषणों से विभूषित थीं। वे सब लोगों के निकट देखते-देखते उस जलती आग में कूद पड़ीं। सोने की बनी हुई वेदी के समान कान्तिमती विशाललोचना सीता को उस समय सम्पूर्ण भूतों ने आग में गिरते देखा। ऋषियों, देवताओं और गंधर्वों ने देखा, जैसे यज्ञ मे पूर्णाहुति का होम होता है उसी प्रकार महाभागा सीता जलती आग में प्रवेश कर रही हैं। जैसे यज्ञ में मंत्रों द्वारा संस्कार की हुई वसुधारा की आहुति दी जाती है, उसी प्रकार दिव्य आभूषणों से विभूषित सीता को आग में गिरते देख वहां आयी हुई सभी स्त्रियां चीख पड़ीं। तीनों लोकों के दिव्य प्राणी, ऋषि, देवता, गन्धर्व तथा दानवों ने भी भगवती सीता को आग में गिरते देखा, मानों स्वर्ग से कोई देवी शापग्रस्त होकर नरक में गिरी हो।'' सामूहिक देखने के बाद इन सबसे सीता के दुख को जो संयुक्ति (alignment) हुई, वह आज तक कायम है। सीता का दुख सबका दुख बन गया है।

आग पर चलने और उसमें से बिना 'बर्न' के निकल आने के अनेक और असंख्य उदाहरण हैं जिनकी आज तक भी कोई वैज्ञानिक व्याख्या संभव नहीं हो पाई है। केवल अमिट विश्वास ही प्रकृति और भौतिकी के नियमों को लांघ पाता है। राम को विश्वास है कि अग्नि सीता का कुछ बिगाड़ नहीं सकती। बर्कान, राबिन्स और अन्यों का यह दावा है कि सकारात्मक मानसिक प्रवृत्तियों में किन्हीं भौतिक शास्त्रीय प्रतिक्रियाओं को बदलने की क्षमता होती है। बर्कान ने न्यूरोफिजियोलाजी, न्यूरोपेप्टाइड्स, एंडोर्फिन्स, पिटयूटरी एवं पीनियल ग्रंथियों में हाल में हुई कई शोधों का उल्लेख करते हुए यह दर्शाया है कि "The simple act of stepping on to glowing coals de,omstrates the mind's knowledge that we will not be harmed and this positive thought alters the entire body chemistry in a way that permits the body to protect itself." बर्कान का यह भी निष्कर्ष है कि people can generate in their own bodies any drug in a pharmacy. राबिन्सन का इसी तरह से यह तर्क है people can change their physiology by changing their belief. Adopting a new belief system creates a new "neurophysiological state". वाशिंगटन ने राबिन्सन की इस प्रतिपत्ति का उल्लेख किया है कि Thoughts can create biochemical-electrical processes react to extreme heat, as well as to the destructiveness of diseare and injury. राबिन्सन के बहुत से सेमीनारों में यह बात सामने आई कि Scientists who have tried to debunk firewalking have been unable to come up with a

plausible, purely physical explanation for why so many people are not getting burned. बर्कान्स का बार-बार यह दावा रहा है कि Firewalking defies the law of phyics and there is no bottomline explanation for why firewalking is possible without injury; it remains a mystery."

अग्नि-प्रसंग यह भी स्थापित करता है कि स्त्री की पवित्रता का निर्णय पुरुषों द्वारा नहीं हो सकता है। स्वयं ईश्वर भी यदि मानव रुप में हैं तो भी स्त्री की सैंक्टिटी सिर्फ और सिर्फ प्रकृति-प्रमाणित है। पुरुष उसका नियंता नहीं है। उसके लिए कोई मोहल्ला सेंसर बोर्ड या खाप पंचायतें भी नहीं हैं। सीता स्वयं को कंजर्व नहीं कर रहीं, वे स्वयं को अनुकूलित भी नहीं कर रहीं और न स्वयं को पुनर्व्यवस्थित कर रहीं है। वे स्वयं को अग्नि-समर्पित कर दे रही हैं। वे समझौता नहीं कर रहीं, न समायोजन को उत्सुक हैं। उन्होंने तो मुक्त होकर मृत्यु के गह्वर में छलांग लगाई है। अपने पर उनकी आस्था unshakable है। सीता कोई मीडियाकर नहीं हैं, सीता कोई परमुखापेक्षी आलसी स्त्री नहीं हैं। सीता तुच्छ नहीं हैं, सीता दासी नहीं हैं, इसलिए अग्नि से भी वे उसी महिमा और गरिमा से लौटेंगी। जीवन के प्रति उनमें अनुराग है लेकिन तभी जब खुद उनके अनुराग का सम्मान हो। यदि राम अपना दिव्यत्व भूले हैं तो सीता को उसकी शिकायत नहीं है। सीता को शिकायत है कि राम सीता का साहचर्य भूल गए, बचपन से बढ़ा हुआ परस्पर अनुराग भूल गए, उनकी हार्दिक भक्ति भूल गए, उनका शील भूल गए।'' हम दोनों का परस्पर अनुराग सदा साथ-साथ बढत्रा है। हम सदा एक साथ रहते आये हैं। इतने पर भी यदि आपने मुझे अच्छी तरह नहीं समझा तो मैं सदा के लिए मारी गयी। बाल्यावस्था में आपने मेरा पाणिग्रहण किया है, इसकी ओर भी ध्यान नहीं दिया। आपके प्रति मेरे हृदय में जो भक्ति है और मुझमें जो शील है, वह सब आपने पीछे ढकेल दिया- एक साथ ही भुला दिया।'' सीता की आपत्ति इस जीवन के विगत अनुभवों को भूल जाने की है, देवताओं की कोशिश राम के सनातन स्वरुप की पुनस्मृति उन्हें कराने की है। इनके बीच में अग्नि-प्रसंग है। इसका अर्थ क्या है? यही न कि यदि आप अपनी पत्नी पर बेवजह शक करते हैं तो स्वयं का ही स्तर गिराते हैं, अपनी आत्म-छबि भी कुंठित करते हैं और पति को परमेश्वर मानने वाली पत्नी के सामने भी काठ के गुड्डे साबित होते हैं।

-सुन्दरकांड एक पुर्नपाठ भाग-11 से साभार

अच्छे इंसान की कद्र नहीं

यह दुनिया का दस्तूर है कि इच्छे इंसान की कोई कद्र नहीं करता। अच्छा इंसान अपना कर्तव्य करते-करते थक जाता है परन्तु उसकी अच्छाई किसी को दिखाई नहीं देतीं। बुरे इंसान की कोई बुराई किसी को दिखाई नहीं देती पर अच्छे इंसान की अच्छी आदतें भी लोगों को बुरी लगती हैं। पता नहीं क्यों लोगों को बुरे लोगों की आदतें क्यों अच्छी लगती हैं जबकि अच्छा इंसान कुछ भी अच्छा कर ले और कितनी भी परीक्षा दे उसको लोग अच्छा मानते ही नहीं।

अच्छे लोगों के सामने लोग इतने ईमानदार बनेंगे जैसे कि वे दूध के धुले हों। लेकिन बुरे आदमी के सामने मानों अपनी ईमानदारी घर पर रख कर आते हैं, आखिर ऐसा क्यों होता है, केवल उनकी ईमानदारी केवल अच्छे लोगों के सामने ही है या फिर वे ढोंग करते हैं। लेकिन उन बुरे लोगों के सामने नहीं जो महिलाओं की इज्जत नहीं समझते हैं। पर ऐसा कोई व्यक्ति जो महिलाओं को इज्जत के साथ-साथ समाज में सबको मान-सम्मान दे, सबकी इज्जत करे, ऐसे इंसान को सब बुरा मानते हैं। देखा जाए तो अन्त में जीत उसी इंसान की होना चाहिए जिसने सबका अच्छा सोचा तथा सबको मान-सम्मान दिया, क्योंकि जीत सत्य की ही होती है। यह बात उन कम बुद्धि वालों को कौन समझायेगा जो कि अच्छे को अच्छा मानते ही नहीं। यह एक ऐसी विचारधारा जो आज दुनिया में चल रही है और असली जीवन की असली कहानी इसी से मिलती-जुलती है। जमाने का आज असली दस्तूर हो गया है कि अच्छे को सब बुरा और बुरे को सब अच्छा मान रहे हैं।

-राहुल रघुवंशी, नेहरु नगर भोपाल
मोबाइल- 9977310060

18 अप्रैल को पिपरिया में सामूहिक विवाह

पिपरिया(कोमलसिंह रघुवंशी)होशंगाबाद जिले के पिपरिया में 28 मार्च को हुई रघुवंशी समाज की बैठक में निर्णय लिया गया कि 18 अप्रैल अक्षय तृतीया को पिपरिया में रघुवंशी समाज का सामूहिक विवाह समारोह आयोजित किया जाए। इस आयोजन में सोहागपुर, पिपरिया और बनखेड़ी तहसीलों के रघुवंशी समाज के युवक-युवतियों को दाम्पत्य बंधन में बांधा जायेगा। इस बैठक को सब डिवीजनल मजिस्ट्रेट मदनसिंह रघुवंशी ने भी सम्बोधित किया।

जहां सुमति तहं संपत्ति नाना, जहां कुमति तहं विपति निधाना

सुरेन्द्रसिंह सिसोदिया रामचाकर

किसी ने कितना सही कहा है- तोप से ना तलवार से, डर लगता है तो सुबह के अखबार से। वास्तव में चाहे अखबार हो या आकाशवाणी या दूरदर्शन सर्वत्र नकारात्मक व विध्वंसात्मक हृदय विदारक समाचार ही पढ़ने, सुनने व देखने को मिलते है, जिनसे मानवीय कुरुपता का वीभत्स चेहरा व आज का नग्न सत्य ही प्रदर्शित होता है। उक्त कु-विचार जन्य तमाम संकटों, विपदाओं एवं आपदाओं से लोहा लेने या लड़ने की अद्भुत क्षमता व सामर्थ्य इस तुच्छ जीवन में सर्व समर्थ प्रभु श्रीराम ही देते हैं तथा उनसे सफलता व कुशलतापूर्वक निपटने हेतु उन्होंने मेरे संदर्भ में एकमात्र हथियार :साधनः कलम ही सुनिश्चित किया है। स्वयं मुझे भी सत्यंवद्-धर्मम् चर रुपी सद्विचार के प्रचार-प्रसार व आचार के अतिरिक्त अन्य कोई सहारा या उपाय नहीं दिखता या सूझता एवं ना ही वैसा कोई संकेत उनकी ओर से मिला है। फलतः उनके बल व प्रताप से जो बन पड़ता है वही लिखकर संतोष कर लेता हूं। इस प्रकार इस आपातकाल में तटस्थ रहकर उसके कारण होने वाले पाप या अपराध का दोषी न बनने का अपने स्वधर्म का स्वल्प निर्वहन ही कर रहा हूं।

अपने कुविचारों व कुकर्मो से अपने वंश को समूल नाश कराने वाले दुर्बुद्धि रावण व दुर्मति दुर्योधन की गति से कौन अनभिज्ञ है? उसी रावण ने अपने मृत्यु पूर्व लक्ष्मणजी को एक ही उपदेश दिया था- शुभस्य शीघ्रं अशुभस्य कालहरण अर्थात्- शुभ करने में देर न करो और अशुभ करने के पूर्व सौ बार सोचो या उसे टालो। इसी प्रकार दुर्योधन भी कहता था कि मैं धर्म को जानता हूं पर उसमें प्रवृत्त नहीं होता व अधर्म को भी जानता हूं परन्तु उससे निवृत्त नहीं होता एवं फिर भी जो हुआ वह सर्वविदित ही है। क्या हम उक्त रावण :सुः नीति से कुछ सबक न लेने हुए दुर्योधन वाली आत्मघाती गलतियां नहीं दुहरा रहे हैं? समस्त मानव कुल व जीव जाति को उक्त दुर्गति से बचाने केवल यही गांधीवादी प्रार्थना -सबको सन्मति दे भगवान- ही की जा सकती है। तुलसी बाबा सही कहते हैं- जहां सुमति तंह संपत्ति नाना, जहां कुमति तहं विपति निधाना।- सार यह कि सब कुछ हम पर ही निर्भर है जिसके परिप्रेक्ष्य में गीता के श्लोक में वर्णित अनुसार बुद्ध संदेश- अप्प दीपो भव, ही आज प्रासंगिक होकर विचारणीय व आचरणीय है एवं वही इस समूचे लेखन का मर्म या निहितार्थ है।

वस्तुतः आज जो विषाक्तता सर्वत्र फैली हुई है उसका एकमेव कारण हमारे विचारों का विषैलापन ही है जिसके चलते धरती आकाश व पाताल सहित हमारा तनमन धन व जीवन सभी कुछ जहरीला हो चुका है। फिर अमृत मिले तो आखिर कैसे? इसी यक्ष प्रश्न के हल हेतु यह सब विचार मंथन किया गया है। जिस प्रकार आदिकाल में यह धरा दानवी, आसुरी संस्कृति व दानवी शक्तियों के आतंक से पीड़ित, त्रस्त व आहत होकर उसके निवारणार्थ आर्त-क्रंदन कर उठी थी, लगभग उसी प्रकार की विषम परिस्थितियां आज पुनः निर्मित हो चुकी हैं। प्रभु के प्रकट होने का अवसर आ चुका है। ऐसी स्थिति में हमें उनके अवतार कार्य में उनके तत्कालीन सहयोगियों के समान अपनी-अपनी भूमिकाएं चुनकर उठ खड़े होने को तत्पर रहना होगा। यही समय की मांग होकर हमारा वर्तमान युग धर्म है। वैसे युद्ध व हिंसा तो अबुद्धों व दुर्जनों का कार्य है, बुद्धों व महावीरों का कार्य तो समाज व संसार को उनसे मुक्ति दिलाना ही है। भगवान व देवी-देवता तो सदैव दानवों व दुर्भाग्य का अन्त कर सज्जनों की रक्षा के साथ धरती पर प्रेम-सद्भाव, सुख-शांति व सौभाग्य के मूल सत्य-धर्म की पुर्नस्थापना करते हैं। भूत, भविष्य व वर्तमान के ऐसे सभी देवदूतों की सेवा में कृतज्ञतापूर्वक यह क्षुद्र भेंट या पुष्पांजलि सविनय प्रस्तुत है।

जीवन में विचारों की महत्ता देखते उन्हें प्रदान व परिष्कृत करने वाले गोविंद व गुरुजनों एवं सबके सुहृदों के प्रति सहज ही पूज्य भाव जागृत होता है। वास्तव में विचार ही जीवन व जगत को संचालित व प्रभावित करते हैं इसलिए उन्हें पवित्र व स्वयं को शुद्ध व सात्विक बनाए रखने हेतु ज्ञान यज्ञ की मशाल को प्रज्जवलित व विचार क्रांति अभियान को जीवन्त रखने की महती आवश्यकता है। उसी की पूर्ति में कुछ स्वाध्याय व सुचिंतन करते हुए इस ईश्वरीय सृष्टि व उसकी सचराचर प्रजा की सुंदरता व समुन्नति हेतु मां शारदा की प्रेरणा से लेखनी स्वमेव ही उठ जाती है। जिस प्रकार तिजोरी में कूड़ा करकट व घर में गंदगी नहीं रखी जाती उसी प्रकार हमारे मन मस्तिष्क व देह में सुखद व सुफलदायी सर्वोदयी विचार कर्म व वस्तु ही संग्रहित रहना चाहिए तभी जन व जग स्वर्णिम व स्वर्गीय बन पाएगा। उसके विपरीत तो सब कुछ भयावह व नारकीय ही सिद्ध होगा। विचार बीज स्वरुप होते हैं व वाणी के रुप में वे अंकुरित होते हैं एवं कर्म के रुप में वे साकार होकर फलीभूत हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में हमें अपने लिए क्या बोना व क्या काटना इसकी विशेष सावधानी रखना अपेक्षित है। मन व वचन तक तो हम अपने कुविचारों व उनसे होने वो दुष्परिणामों पर कुछ अंकुश लगा सकते हैं अन्यथा तत्पश्चात तो उनके कर्मफल सबको भोगना ही पड़ते हैं। उन्हीं से बचने व बचाने के प्रयास का सुफल यह कृति है जिसमें वह सफल हो यही सद्भावना व शुभकामना है।

-पूर्व न्यायाधीश, डाडियाखेड़ी जागीर,
कालापीपल, जिला- शाजापुर, म.प्र.-465337

"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी आंचल में है दूध, आंखों में पानी"

अर्चना रघुवंशी

मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियां मुझे याद आती हैं। तब ये सोचने को मजबूर हो जाती हूं कि आज भी भारत के कई पिछड़े इलाकों में औरत की यही दास्तां है। एक भारतीय परिवार में लड़की को बचपन से यही पाठ पढ़ाया जाता है कि तुम्हें बड़े होकर विवाह के उपरांत दूसरे घर जाना है। यानी पहले तो वो बेटी रहती है उसके पश्चात बहू व पत्नी बनती है, और तत्पश्चात एक मां बन कर रह जाती है और अगर वो पढ़ी-लिखी भी है तो विवाह उपरांत उसे परिवार की जिम्मेदारी निभाने के लिए अपने करियर से समझौता करना पड़ता है। उसे बड़ों के द्वारा यही सीख दी जाती है कि उसके लिए उसके परिवार को खुश रखना ही प्राथमिकता है उसके लिए स्वयं की कुछ खुशी नहीं रह जाती है और इस तरह बाहरी दुनिया के दरवाजे बंद हो जाते हैं। वह पूरी तरह से अपने पति पर निर्भर हो जाती है। पर शायद बदलते वक़्त ने नारी को भी झंझोड़ कर रख दिया है। मैं तो यही कहना चाहूंगी कि हर औरत को शादी के पश्चात भी कुछ न कुछ करते रहना चाहिए। जरूरी नहीं कि वो एक ऑफिस में ही काम करें। बल्कि घर पर रहकर भी कुछ न कुछ जरूर करना चाहिए ताकि उसका स्वयं पर से विश्वास न टूटे। ईश्वर ने नारी को भरपूर शक्ति दी है और उसमें इतनी प्रतिभा होती है कि वह घर की जिम्मेदारी निभाते हुए खुद भी कुछ कमाई कर सकें। कार्य चाहे छोटा हो या बड़ा, ये जरूरी नहीं कि उसे पैसा कितना मिल रहा है। जरूरी है उसका आत्मसम्मान। जब कोई स्त्री खुद कार्य करती है तब उसे स्वयं में संतुष्टि का अनुभव होता है। उसे एहसास होता है कि उसका जीवन सिर्फ अपने परिवार की जिम्मेदारी निभाना ही नहीं है। बल्कि इसके सिवाय भी और जीवन है और आर्थिक रूप से भी वह अपने परिवार की मदद कर सकती है। इससे उसे मानसिक शांति भी मिलती है कि वह सिर्फ एक मां बेटी या बहू ही नहीं बल्कि स्वयं भी एक स्त्री है।

"हर चीज से बढ़कर अपने जीवन की नायिका बनिए शिकार नहीं।"

"क्योंकि नारी ही समाज की वास्तविक वास्तुकार है।"

"सशक्त नारी से ही सशक्त समाज होता है।"

"मैं भी छू सकती हूं आकाश, मौके की है मुझे तलाश।"

अंजलि रघुवंशी का सुयश

अशोकनगर। 15 मई 1996 को जन्मी अंजलि रघुवंशी का dsp mp police के पद पर 21 वर्ष की आयु में हुआ चयन। विगत दिनांक 23 दिसम्बर 17 को mp psc परीक्षा का परिणाम घोषित हुआ जिस मे ग्राम बामोरा शाढोरा जिला अशोकनगर निवासी भानू सिंह जी कृषक की पुत्री व मुकेश बामोरा शिक्षक की भतीजी अंजलि बिटिया का चयन हुआ है। ग्रामीण परिवेश में पली बढ़ी अंजलि अपने परिवार की सबसे बड़ी बेटी है। अंजलि द्वारा पहली बार के प्रयास में यह सफलता हासिल की गई है। अंजलि वचपन से ही dsp बनना चाहती थी। अंजलि ने गुना में भी शिक्षा ग्रहण की है। अंजलि के dsp पद पर चयन से ग्राम बामोरा व परिवार में हर्ष व्याप्त हैं। दादाजी गजेंद्र सिंह, पिता भानू सिंह चाचा संजय , रामकृष्ण, रविन्द्र, मुकेश, द्वारा अंजलि को परिवार का नाम रोशन करने के लिए धन्यवाद अर्पित किया है। बधाई देने वालों में विजय खतक्या, सुनील सेमरी, ब्रज मगराना, सुनील करख्या, अरविन्द्र चक्क, के.पी. सर गिन्दोरा, राजू बामोरा, आदि शामिल हैं।

बलराम सिंह रघुवंशी उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित

इंदौर। श्री बलराम सिंह रघुवंशी उप निरीक्षक अपराध शाखा इंदौर को उत्कृष्ट कार्य करने पर माननीय श्री हरिनारायण चारी मिस्र पुलिस उपमहानिरीक्षक शहर इंदौर द्वारा प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया। रघुकुल युवा संगठन सिवनी मालवा जिला होशंगाबाद द्वारा श्री बलराम सिंह रघुवंशी उप निरीक्षक अपराध शाखा इंदौर को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं वरषि गये पुनि तबहि सुखाहीं

श्याम सुन्दर रघुवंशी

विषय प्रवेश रामचरित मानस के सुंदरकांड के बाईसवें दोहे पश्चात् की चौपाई से संबंधित है।

वाणी की शोभा राम नाम से होती है। खूबसूरत स्त्री की शोभा वस्त्रों से होती है तथा नदी की शोभा जलधारा एवं जल से होती है। संदर्भ में प्रसंग है सुंदरकांड का जब हनुमानजी को ब्रम्हपाश में बांधकर मेघनाद रावण के दरबार में लाया था। रावण दुर्वचन कहकर हनुमानजी को मात्र एक वानर के रुप में देखता है तथा अशोक वाटिका उजाड़ने पर क्रोधित होकर उपहास करता है। तब हनुमान जी कहते हैं कि भगवान राम ब्रम्ह परमात्मा हैं तथा तुम सीता को हर कर लाये हो। उन्हें ले जाकर भगवान राम को सौंप दो और शारणागति प्राप्त करो। बिना राम की शरणागति तुम्हारी भौतिक शक्तियां, अहंकार, बल, दंभ सभी क्षणिक हैं तथा लंका की संपत्ति एवं सारा वैभव स्थायित्व से परे मात्र दिखावा है क्योंकि रावण के मूल में वह स्त्रोत नहीं है कि भगवान राम के प्रति श्रद्धा, आदर, भक्ति और समर्पण की भावना पैदा कर सके। वैसे ही जिन नदियों के मूल में पानी के स्त्रोत नहीं हैं उनमें केवल वर्षा होने पर ही जल दिखाई देता है और उसके पश्चात् फिर सूखी रह जाती है। सजल मूल का स्त्रोत वर्षा एवं वन हैं। सघन एवं दीर्घकालीन तथा गहरी जड़ों वाले वृक्ष वर्षा जल को पत्तों एवं डालियों से उसकी पीड़ और जड़ों के माध्यम से भूजल संवर्धन करते हुए वर्षा उपरांत भी नदी में जल का स्त्रोत बनाये रखते हैं। वृक्ष का विस्तार भी इसका जलग्रहण क्षेत्र होता है। जल स्त्रोतों में ''स'' लगाने से सभी कारक जो जल की आवक क्षमता बढ़ाते हैं वे सभी सजल हैं, जैसे पशुपालन, गोबर खाद, वन्यप्राणी, वन, पक्षी, वाष्पीकरण रोकने के साधन भूजल संवर्धन एवं संग्रहण साधन जैसे सहायक नदियां जो भी जलग्रहण क्षेत्र में आती हों। नदियों में शहरी मल-जल आकर पानी की गुणवत्ता पर अत्यंत प्रदूषण पैदा करता है। उद्योगों से निस्सारित जल भले ही बायो केमिकल आक्सीजन एवं अपशिष्ट मानक स्तर पर हों परंतु नदियों में बहाव की कमी से उनमें पानी की मात्रा दिन-प्रतिदिन, विशेषकर वर्षाकाल को छोड़कर शरद एवं ग्रीष्म ऋतुओं में अत्यंत कमी हो जाती है जिसके कारण नदियों के जल स्त्रोत आवश्यकता से कम पड़ जाते हैं। उदाहरणतः यदि बेतवा नदी को विदिशा नगर का पेयजल स्त्रोत मानते हैं तो भी भोपाल महानगर का मल-जल बेतवा में मिलने से गुणवत्ता प्रभावित होती है। यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विदिशा नगर का पेयजल भोपाल महानगर के मल जल से प्रदूषित होकर शुद्धीकरण यंत्रालय पर अत्यधिक रासायनिक पदार्थ जैसे फिटकरी एवं क्लोरीन मिलाने पर भी मानक स्तर में रासायनिक प्रदूषण मिलाता है। ऐसे शहरी मल जल स्त्रोत कभी सजल स्त्रोत नहीं हो सकते हैं।

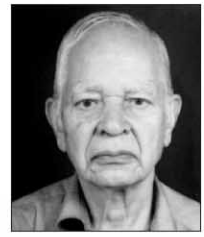

नर्मदा पुराण में नर्मदा नदी को न मरने वाली अर्थात ''नर्मदा'' नाम से परिभाषित किया गया है। यथार्थता में नर्मदा में पर्याप्त वर्षा होने पर भी आवक जल की मात्रा में वर्ष प्रतिवर्ष कमी आ रही है जिसके मुख्य कारण वनों की सघनता एवं वृक्षों की जल आवक क्षमता में निरंतर कमी उनके अल्पकालीन जीवन के कारण तथा मुख्य एवं सहायक नदियों पर जलग्रहण क्षेत्र में डूब के क्षेत्रों में वन नष्ट होने से दीर्घकालीन स्त्रोतों का निर्माण नहीं हो पाना है। ऐसा जल जलाशय की सतह में संग्रहित होकर अतिशीघ्र बह जाता है जबकि भूजल संग्रह का स्त्रोत हमेशा नदी में जल की आवक बनाये रखता है।

वर्तमान कृषि रासायनिक खादों के ऊपर आधारित होती है जिससे जमीन भुरभुरी होकर मिट्टी के कटाव को बढ़ावा देने से बांधों के कारण जल क्षमता भी मिट्टी भराव से कम होती रहती है। सजल स्त्रोत हेतु पशुपालन एवं गोबर खाद की प्रचुरता से भूजल स्त्रोत बढ़ता है। अतः सघन वनीकरण चाहे कृषि भूमि में भी क्यों न हो जलग्रहण क्षेत्र में भी सघनता बढ़ाना आवश्यक है। सघनता के लिए वनों की कटाई भी प्रतिबंधित होना आवश्यक है। डेयरी उद्योगों को भी नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में उपयुक्त स्थलों पर बढ़ावा देने से गोबर एवं जैविक खाद की प्रचुरता जल में सजलता ला सकेगी। गौशालाएं और वृद्ध गोवंश को ऐसे ही आश्रमों में बढ़ावा देना सजलता लाने का अनूठा विकल्प है। बड़ी नदियों के समानान्तर एवं नदी के आर पार के मार्गो पर ऐसे ही दीर्घकालीन वृक्ष जैसे आम, महुआ, नीम,जामुन या वनोपज प्रदान करने वाले सजल वृक्षारोपण की परिपाटी भी सतत रखना चाहिए। नदियों को पुनर्जीवित करना तथा जल की आवक बढ़ाना मनुष्यों एवं समाज का परमार्थ कार्य है, यहां तक जीवन की अंतिम यात्रा में भी अन्त्येष्टि हेतु क्रम से पांच वृक्षों को लगाने का संकल्प लेना ही चाहिए। ऐसी प्रथा हेतु विवाहों के अवसर पर धर्मगुरुओं को पाणिग्रहण संस्कारों के साथ ही वृक्षारोपण संस्कार की परिपाटी स्थापित कराना परम धर्म है।

- ई- 6/2 अरेरा कालोनी,
मोबा. 9425673299

विनयपत्रिका : एक परिचय

पं. रामचन्द्र शुक्ल

भक्तिरस का पूर्ण परिपाक जैसा विनयपत्रिका में देखा जाता है वैसा अन्यत्र नहीं। भक्ति में प्रेम के अतिरिक्त आलम्बन के महत्व और अपने दैन्य का अनुभव परम आवश्यक अंग है। तुलसी के हृदय से इन दोनों अनुभवों के ऐसे निर्मल शब्द-स्त्रोत निकले हैं जिनमें अवगाहन करने से मन की मैल कटती है और अत्यन्त पवित्र प्रफुल्लता आती है। गोस्वामीजी के भक्ति-क्षेत्र में शील, शक्ति और सौन्दर्य तीनों की प्रतिष्ठा होने के कारण मनुष्य की सम्पूर्ण रागात्मिका प्रकृति के परिष्कार और प्रसार के लिए मैदान पड़ा हुआ है। जिस प्रकार लोक-व्यवहार से अपने को अलग कर के आत्मकल्याण की ओर अग्रसर होने वाले काम, क्रोध आदि शत्रुओं से बहुत दूर रहने का मार्ग पा सकते हैं उसी प्रकार लोक-व्यवहार में मग्न रहने वाले अपने भिन्न-भिन्न कर्तव्यों के भीतर ही आनंद की वह ज्योति पा सकते हैं जिससे इस जीवन में दिव्य जीवन का आभास मिलने लगता है और मनुष्य के वे सब कर्म, वे सब वचन और वे सब भाव- क्या डूबते हुए को बचाना, क्या अत्याचारी पर शस्त्र चलाना, क्या स्तुति करना, क्या निन्दा करना, दया से आर्द्र होना, क्या क्रोध से तमतमाना-जिनसे लोक का कल्याण होता आया है, भगवान के लोक-पालन करने वाले कर्म, वचन और भाव दिखाई पड़ते हैं।

यह प्राचीन भक्ति-मार्ग एकदेशीय आधार पर स्थित नहीं है, यह एकांगदर्शी नहीं है। यह हमारे हृदय को ऐसा नही करना चाहता कि हम केवल व्रत-उपवास करने वालों और उपदेश करने वालों ही पर श्रद्धा रखें और जो लोग संसार के पदार्थों का उचित उपभोग करके अपनी विशाल भुजाओं से रणक्षेत्र में अत्याचारियों का दमन करते हैं, या अपनी अन्तर्दृष्टि की साधना और शारीरिक अध्यवसाय के बल से मनुष्य जाति के ज्ञान की वृद्धि करते हैं, उनके प्रति उदासीन रहें। गोस्वामीजी की राम-भक्ति वह पदार्थ है जिससे जीवन में शक्ति, सरसता, प्रफुल्लता, पवित्रता सब कुछ प्राप्त हो सकती है। आलम्बन की महत्व-भावना से प्रेरित दैन्य के अतिरिक्त भक्ति के और जितने अंग हैं- भक्ति के कारण अन्त:करण को जो और-और शुभ वृत्तियां प्राप्त होती हैं- सबकी अभिव्यंजना विनयपत्रिका के भीतर हम पा सकते हैं। राम में सौन्दर्य, शक्ति और शील तीनों की चरम अभिव्यक्ति एक साथ समन्वित होकर मनुष्य के सम्पूर्ण हृदय को- उसके किसी एक ही अंश को नहीं- आकर्षित कर लेती है। कोरी साधुता का उपदेश पाखंड है, कोरी वीरता का उपदेश उद्दंडता है, कोरे ज्ञान का उपदेश आलस्य है और कोरी चतुराई का उपदेश धूर्तता है।

सूर और तुलसी को हमें उपदेशक के रुप में न देखना चाहिए। ये उपदेशक नहीं हैं, अपनी भावुकता और प्रतिभा के बल से लोकादर्श की मनोहर मूर्ति प्रतिष्ठित करने वाले हैं। हमारा प्राचीन भक्ति-मार्ग उपदेशकों की सृष्टि करने वाला नहीं है। सदाचार और ब्रह्मज्ञान के रुखे उपदेशों द्वारा इसके प्रचार की व्यवस्था नहीं है। न हमारे राम और कृष्ण उपदेशक , न उनके भक्त तुलसी और सूर। लोक-व्यवहार में मग्न होकर जो मंगल-ज्योति इन अवतारों ने उसके भीतर जगाई, उसके माधुर्य का अनेक रुपों में साक्षात्कार करके मुग्ध होना और मुग्ध करना ही इन भक्तों का प्रधान व्यवसाय है। उनका शस्त्र भी मानव हृदय है और लक्ष्य भी। उपदेशों का ग्रहण ऊपर ही ऊपर से होता है। न वे हृदय के मर्म को ही भेद सकते हैं, न बुद्धि की कसौटी पर ही स्थिर भाव से जमे रह सकते हैं। हृदय तो उनकी ओर मुड़ता ही नहीं और बुद्धि उनको लेकर अनेक दार्शनिक वादों के बीच जा उलझती है। उपदेश, वाद या तर्क गोस्वामीजी के अनुसार ''वाक्य-ज्ञान'' मात्र कराते हैं, जिससे जीवकल्याण का लक्ष्य पूरा नहीं होता-

वाक्य-ज्ञान अत्यंत निपुन, भव-पार न पावै कोई।
निसि गृह मध्य दीप की, बातन तम निवृत्त नहीं होई।

वाक्य-ज्ञान और बात है, अनुभूति और बात। इसी से प्राचीन परंपरा के भक्त लोग उपदेश, वाद या तर्क की अपेक्षा चरित्र-श्रवण और चरित्र-कीर्तन आदि का ही अधिक नाम लिया करते हैं।

प्राचीन भागवत सम्पदाय के बीच भगवान के उस लोक-रंजनकारी रुप की प्रतिष्ठा हुई जिसके अवलम्बलन से मानव-हृदय अपने पूर्ण भाव संचार के साथ कल्याण-मार्ग की ओर आप से आप आकर्षित हो सके। इसी लोकरंजनकारी रुप का प्रत्यक्षीकरण प्राचीन परंपरा के भक्तों का लक्ष्य है, उपदेश देना नहीं। उसी मनोहर रुप की एक एक छटा को औरों के सामने भी रखकर उन्हें मानव-जीवन के सौन्दर्य-साधन में प्रवृत्त करना भक्तों का काम है।

गोस्वामीजी ने अनन्त सौन्दर्य का साक्षातकार करके उसके भीतर ही अनन्त शक्ति और अनन्त शक्ति और अनन्तशील की वह झलक दिखाई है, जिससे लोक का प्रमोद-पूर्ण परिचालन होता है। सौंदर्य, शक्ति और शील तीनों में मनुष्य मात्र के लिए आकर्षण विद्यमान है। रुप-लावण्य के बीच प्रतिष्ठित होने से शक्ति और शील को और भी अधिक सौन्दर्य प्राप्त हो जाता है, उनमें एक अपूर्व मनोहरता आ जाती है। जिसे शक्ति-सौन्दर्य की यह झलक मिल गई, उसके आचरण पर इसके मधुर प्रतिबिम्ब की छाप बैठी। प्राचीन भक्ति के इस तत्व की ओर ध्यान न देकर जो लोग हृदय में

सच्चे वीर होने का अभिलाष जीवन भर के लिए जग गया, जिसने शील सौंदर्य की यह झांकी पाई, उसके लोकादर्श-स्थापक सूर और तुलसी को कबीर, दादू आदि की श्रेणी में रख कर देखते हैं, वे बड़ी भारी भूल करते हैं।

अनन्त-शक्ति-सौंदर्य-समन्वित अनन्त शील की प्रतिष्ठा करके गोस्वामीजी को पूर्ण आशा होती है कि उसका आभास पाकर जो पूरी मनुष्यता को पहुंचा हुआ हृदय होगा वह अवश्य द्रवीभूत होगा-

सुनि सीतापति सील सुभाउ।
मोद न मन, तन पुलक,
नयन जल सो नर खेहर खाउ।।

इसी हृदय-पद्धति द्वारा ही मनुष्य में शील और सदाचार का स्थयी संस्कार जम सकता है। दूसरी कोई पद्धति है ही नहीं। चरम महत्व के इस भव्य मनुष्य-ग्राह्य रुप के सम्मुख भाव-विह्वल भक्त-हृदय के बीच जो जो भाव तरंगें उठती हैं उन्हीं की माला यह विनय पत्रिका है। महत्व और इन भाव-तरंगों की स्थिति परस्पर बिंब-प्रतिबिंब समझनी चाहिये। भक्त में दैन्य, आत्म-समर्पण, आशा, उत्साह, आत्मग्लानि, अनुताप, आत्म-निवेदन आदि की गंभीरता उस महत्व की अनुभूति की मात्रा के अनुसार समझिये। महत्व का जितना ही सान्निध्य प्राप्त होता जायेगा-उसका जितना ही स्पष्ट साक्षात्कार होता जायेगा-उतना ही अधिक स्फुट इन भावों का विकास होता जायेगा और इन पर भी महत्व की आभा चढ़ती जायेगी। मानों ये भाव महत्व की ओर बढ़ते जाते हैं और महत्व इन भावों की ओर बढ़ता आता है। इस प्रकार लघुत्व का महत्व में लय हो जाता है। सारांश यह है कि भक्ति का मूल तत्व है महत्व की अनुभूति। इस अनुभूति के साथ ही दैन्य अर्थात अपने लघुत्व की अनुभूति का उदय होता है। इस अनुभूति को दो ही पंक्तियों में गोस्वामीजी ने बड़े ही सीधे-सादे ढंग से कह दिया है-

राम सों बड़ो है कौन, मोसों कौन छोटो?
राम सों खरो है कौन, मोसों कौन खोटो?

प्रभु के महत्व के सामने होते ही भक्त के हृदय से अपने लघुत्व का अनुभव होने लगता है। उसे जिस प्रकार प्रभु का महत्व वर्णन करने में आनंद आता है उसी प्रकार अपना लघुत्व वर्णन करने मे भी। प्रभु की अनन्त शक्ति के प्रकाश में उसकी असामर्थ्य का, उसकी दीन दशा का, बहुत साफ चित्र दिखाई पड़ता है और वह अपने ऐसा दीनहीन संसार में किसी को नहीं देखता। प्रभु के अनन्त शील और पवित्रता के सामने उसे अपने में दोष ही दोष और पाप ही पाप दिखाई पड़ने लगते हैं। इसी दृश्य के क्षोभ से आत्म-शुद्धि का आयोजन आप से आप होता है। इस अवस्था को प्राप्त भक्त अपने दोषों, पापों और त्रुटियों को अत्यन्त अधिक परिमाण में देखता है और उनका जी खोल कर वर्णन करने में बहुत कुछ संतोष लाभ करता है। दंभ, अभिमान, छल, कपट आदि में से कोई उस समय बाधक नहीं हो सकता। इस प्रकार अपने पापों की पूरी सूचना देने से जी का बोझ ही नहीं, सिर का बोझ भी कुछ हलका हो जाता है। उसके सुधार का भार उसी पर न रह कर बंट सा जाता है।

इस अवस्था के पद इस ग्रंथ में बहुत अधिक हैं। ऐसी उच्च मनोभूमि की प्राप्ति, जिसमें अपने दोषों को झुक झुक कर देखने ही की नहीं, उठा, उठा कर दिखाने की भी प्रवृत्ति होती है, ऐसी नहीं जिसे कोई कहे कि यह कौन बड़ी बात है। लोक की सामान्य प्रवृत्ति तो प्रायः इसके विपरीत ही होती है, जिसे अपनी ही मानकर गोसाईजी कहते हैं-

जानत हूं निज पाप जलधि जिय, जलसीकर सम सुनत लरौं।
रजसम पर अवगुन सुमेरु करि, गुन गिरिसम रज ते निदरौं।।

ऐसे वचनों के सम्बंध में यह समझ रखना चाहिये कि वे दैन्य भाव के उत्कर्ष की व्यंजना करने वाले उद्गार हैं। ऐतिहासिक खोज की धुन में इन्हें आत्म-वृत्ति समझ बैठना ठीक न होगा। इन शब्दप्रवाहों में लोक की सामान्य प्रवृत्ति की व्यंजना हो जाती है, इससे इनके द्वारा प्रत्येक मनुष्य अपने दोषों और बुराइयों की ओर दृष्टि ले जाने का साहस प्राप्त कर सकता है। दैन्य भक्तों का बड़ा भारी बल है। परम महत्व के सानिध्य से हृदय में उस महत्व में लीन होने के लिए जो अनेक प्रकार के आंदोलन उत्पन्न होते हैं वे ही भक्तों के भाव हैं। कभी भक्त अनन्त रुप-राशि के अनुभव से प्रेम-पुलकित हो जाता है, कभी अनन्त शक्ति की झलक पाकर आश्चर्य और उत्साह से पूर्ण होता है, कभी अनन्तशील की भावना से अपने कर्मों पर पछताता है और कभी प्रभु के दया-दाक्षिण्य को देख मन में इस प्रकार ढाढ़स बांधता है-

कहा भयो जो मन मिलि कलिकालहि,
कियों भौंतुवा भौंर को हौं।
तुलसिदास सीतल नित एहि बल, बड़े ठेकाने ठौर को हौं।।

दिन रात स्वामी के पास रहते-रहते जिस प्रकार सेवक की कुछ झिझक खुल जाती है, उसी प्रकार प्रभु के सतत ध्यान से जो सान्निध्य की अनुभूति भक्त के हृदय में उत्पन्न होती है, उसके कारण वह कभी भी मीठा उपालंभ भी देता है। भक्ति में लेन-देन का भाव नहीं रह जाता है। भक्ति के बदले में उत्तम गति मिलेगी, इस भावना को लेकर भक्ति हो ही नहींसकती। भक्त के लिए भक्ति का आनंद ही उसका फल है। वह शक्ति, सौंदर्य और शील के अनन्त समुद्र के तट पर खड़ा होकर लहरें लेने में ही जीवन का परम फल मानता है-

इहै परम फल, परम बड़ाई।
नख सिख रुचिर बिंदुमाधव
छबि निरखहिं नयन अघाई।।

वह यही चाहता है कि प्रभु के सौन्दर्य, शक्ति आदि की अनन्तता की जो मधुर भावना है वह अबाध रहे- उसमें किसी

प्रकार की कसर न आने पावे। अपने ऐसे पापी की सुगति को वह प्रभु की शक्ति का एक चमत्कार समझता है। अतः उसे यदि सुगति न प्राप्त हुई तो उसे इसका पछतावा न होगा, पछतापा होगा इस बात का कि प्रभु की अनन्त शक्ति की भावना बाधित हो गई-

नाहिंन नरक परत मो कहँ डर, जद्यपि हौं अति हारो।
यह बड़ि त्रास दासतुलसी प्रभु, नामहु पाप न जारो।।

विनय में कई एक पद ऐसे हैं जिनमें भक्ति की चरमावस्था ज्ञानयोग की चरमावस्था सी ही कही गई है जैसे-

रघुपति भगति करत कठिनाई।
कहत सुगम, करनी अपार,
जानै सोई जेहि बनि आई।।
-- -- -- --
सकल दृश्य निज उदर मेलि, सोवै निद्रा तजि जोगी।
सोइ हरिपद अनुभवै परम सुख, अतिसय द्वैत बियोगी।।
सोक, मोह, भय, हरष, दिवस, निसि, देसा काल तहँ नाहीं।
तुलसीदास एहि दसाहीन, संसय निर्मूल न जाहीं।।

प्रभु के सर्वगत होने का ध्यान करते भक्त अन्त में जाकर उस अवस्था को प्राप्त करता है जिसमें वह अपने साथ साथ समस्त संसार को उस एक अपरिच्छिन्न सत्ता में लीन होता हुआ देखने लगता है और दृश्य भेदों का उसके ऊपर उतना जोर नहीं रह जाता। तर्क या मुक्ति ऐसी अवस्था की सूचना भर दे सकती है- ''वाक्य-ज्ञान'' भर करा सकती है- अनुभव नहीं करा सकती। भक्ति अनुभव करा सकती है। संसार में परोपकार और आत्मत्याग के जो उज्जवल दृष्टान्त कहीं-कहीं दिखाई पड़ा करते हैं वे इसी अनुभूति-मार्ग में कुछ न कुछ अग्रसर होने के हैं। यह अनुभूति मार्ग या भक्ति-मार्ग बहुत दूर तक तो लोक-कल्याण की व्यवस्था करता दिखाई पड़ता है पर और आगे चलकर यह निस्संग साधक को सब भेदों से परे ले जाता है। कुछ थोड़े से पदों में दार्शनिक सिद्धान्तों की भी चर्चा मिलती है, जैसे-

केशव कहि न जाइ, का कहिए।
-- -- --
सून्य भीति पर चित्र, रंग नहिं, तनु बिनु लिखो चितेरे।
धोए मिटै न, मरै भीति, दुख पाइय यदि तनु हेरे ।।
-- -- --
कोउ कह सत्य, झूठ कह कोऊ, जुगल प्रबल करि मानै।
तुलसीदास परिहरै तीनि भ्रम, सो आपन पहिचानै ।।

इसमें मायावाद आदि सब दार्शनिक मतों को अपूर्ण कहकर केवल उनके द्वारा आत्मानुभूति असंभव कही गयी है। सच्ची भक्ति से ही क्रमशः वह अवस्था प्राप्त हो सकती है जिससे जीवन का कल्याण होता है। जहां तक समझ में आता है गोस्वामीजी का मतलब यह नहीं जान पड़ता है कि ये सब मत बिल्कुल असत्य हैं। कहने का तात्पर्य यह समझ पड़ता है कि ये सब पूर्ण सत्य नहीं हैं- अशंतः सत्य हैं। इनमें से किसी एक को पूर्ण सत्य मानकर दूसरे मतों की उपेक्षा करने से सच्ची तत्वदृष्टि नहीं प्राप्त हो सकती। गोस्वामीजी ने यथावसर भिन्न भिन्न मतों से वैराग्य की पुष्टि के लिए सहारा लिया है- जैसे इस पद में सत्कार्यवाद और अद्वैतवाद का मिश्रण-सा दिखाई पड़ता है-

जौ निज मन परिहरै विकारा।
तौ कत द्वैत-जनित संसृति-दुख संसय सोक अपारा?
-- -- --
विरप मध्य पुत्रिका, सूत्र महँ कंचुक बिनहि बनाए।
मन महँ तथा लीन नाना तनु, प्रगटत अवसर पाए।।

इसी प्रकार संसार की असारता के सम्बंध में वे कहते हैं --

मैं तोहिं अब जान्यों, संसार !
देखत ही कमनीय, कछू नाहिंन
पुनि किए विचार।

इस पर ''कछू नाहिंन'' को मायावाद का सा ''नहीं'' न समझना चाहिए।

सारांश यह कि गोस्वामीजी की यह विनय-पत्रिका भक्ति-रस के नाना स्वादों से भरी हुई है। हिन्दी साहित्य में यह एक अनमोल रत्न है। यद्यपि इसके कुछ पद जन-साधारण के बीच प्रचलित हैं पर शुद्ध पाठ और टीका टिप्पणी न होने के कारण इधर बहुत दिनों तक समग्र ग्रंथ के पाठ का आनंद अधिकतर लोग नहीं उठा सकते थे। श्री बेज नाथ कुरमी आदि की पुराने ढंग की टीकाएं थीं, पर वे सबके काम की न थीं। थोड़े दिन हुए पंडित रामेश्वर भट्ट जी ने आजकल की चलती भाषा में एक टीका की। पर अवधी भाषा से पूर्ण परिचित न होने के कारण कई स्थलों पर वे भ्रम से न बच सके। यद्यपि कविता-वली और गीतावली के समान 'विनय' की भाषा भी व्रज ही रखी गई है पर अवधी की छाप उसमें जगह-जगह मौजूद है, क्योंकि वह गोस्वामीजी की मातृभाषा थी। ऐसे स्थलों पर प्रायः अर्थ में भूलें हुई हैं जैसे-

राम को गुलाम नाम रामबोला राख्यो राम,
काम यहै नाम द्वै हौं कबहूं कहत हौं।
रोटी लूगा नीके राखैं, आगेहू की बेद भाखैं?
'भली है तेरो', ताते आनंद लहत हौं।।

इस पद में 'रोटी लूगा' का अर्थ 'अन्न वस्त्र स्पष्ट है, पर श्रीयुत भट्टजी ने अर्थ किया है ''रोटी लूंगा''। पूरबी शब्द 'लूगा' का अर्थ न जानने पर भी यदि भट्टजी ने 'लेना' क्रिया के 'लूंगा' रुप पर ही विचार कर लिया होता- तो इस प्रकार का अर्थ करने के श्रम से बच जाते। 'लेना' क्रिया का 'लूंगा।

-तुलसी मानस भारती से साभार

KAMLA NEHRU HR. SEC. SCHOOL
&
SUNSHINE KINDERGARTEN

Imparting Education Building Lives • Blossoming Hearts Developing Minds

शिववरण सिंह रघुवंशी
संस्थापक सचिव

CBSE Affiliated
ISO 9001:2008 Certified School

- Interactive Digital White Board Technology Equipped Classrooms
- Multimedia Classrooms with TeachNext & LearnNext
- Interactive English Language Lab & Maths Lab
- School Band, NCC, Bharat Scout & Guide and Red Cross Unit
- Quality & Comprehensive Education at Affordable Fees

KAMLA NEHRU MAHAVIDYALAYA
(B.Ed. College)

[Approved by the National Council for Teacher Education & M.P. Govt.]
(Affiliated to Barkatullah University, Bhopal)

Ph. : 0755-4244754 E-mail : knmahavidyalaya@yahoo.co.in Website : kamlanehru-college.org

Kamla Nagar, Kotra Sultanabad, Bhopal. Ph. : 2762130, 4244355
E-mail : kamla.nehru.school@gmail.com Website : kamlanehruschool.in

विवाह योग्य युवक-युवती

Name: **Gaurav Raghuwanshi**, Date Of Birth - 20th September 1988, Birth time - 7.07 Pm, Birth Place - Akot (Maharastra), Height- 6 ft., Religion - Hindu-Kshatriya, Gothra (Self)-Songar Gothra (Mama)-Pachalyya,Education- Bachelor of Pharmacy (B.Pharmacy), M.B.A. (Production & Marketing) from Indore, PGDCA, Working status-Self employed– Medical Shop at Khargone., Family Background : Father-Shri Baldev Singh Songar (Retired Revenue-inspector), Mob no.-09425981220, 09575280803, Mother-Smt. Rajni Songar (Housewife) Mob : 09425941654, Elder Sisters – 1. Mrs. Megha Barod -(Married to Mr.Ranjeet Singh Barod,LIC,Dhar), 2. Miss Shweta Raghuwanshi –(officer in Bank of India Indore), Other Details-Residence (Own)- 127, Shreenath Colony Diversion Road, Khargone(M.P.), Email - bssongar@gmail.com

NAME : **RANI RAGHUWANSHI**, FATHER'S NAME: SH. ASHOK SINGH RAGHUWANSHI, DATE OF BIRTH: 26-12-1989(1:20AM), PLACE OF BIRTH - LUKWASA(SHIVPURI), QUALIFICATIONS- BE(COMPUTER SCIENCE), MBA IN FINANCE(APPEARING,DISTANCE LEARNING), JOB PROFILE: OFFICER IN BANK OF INDIA, POSTED AT KOLARAS BRANCH, HIEGHT: 5.1", WIEGHT 48, COMPLEXION FAIR, GOTARA RIJODIYA, MAMA'S GOTARA: PACHALAIYA, BROTHER'S - 1. RANU RAGHUWANSHI(CA) WORKING IN SFURNA GLOBLE LTD NIGERIA(SA)., 2. RAVI RAGHUWANSHI (BE) COMPETITIVE EXAM PREP., 3. SHAILENDRA RAGHUWANSHI (BA RUNNING), FATHER'S BROTHER - 1. SH. GOVIND SINGH RAGHUWANSHI (RETIRED DISTT. EXCISE OFFICER), 2. SH. RAJARAM SINGH RAGHUWANSHI (RETIRED ADMINISTRATIVE OFFICER MED. EDUCATION DETT.)

Name- **Shilpa Raghuwanshi**, Date of birth- 29/05/89, Birth Place-Guna, Timing - 6:30pm, Education- BE in Electronics and Communication, Working in tech Mahindra, Father : Mr C P Raghuawnshi, Occupation : Owns a Construction firm , former sub engineer, Ancestral Agricultural land in village bagulya., Mother: Smt Krishna Raghuwanshi (home maker), Father Gotra: kervar, Mother Gotra: Dandir. Has 3 siblings, Eldest Sister settled and working in London., Twin sister working in Pune And a youngest brother.

Name- **Shivali Raghuwanshi**, Date of birth- 29/05/89, Birth Place-Guna, Timing- 6:35pm, Education- BE in Electronics and Communication, working in TCS, Father : Mr C P Raghuwanshi, Occupation : Owns a Construction firm , former sub engineer, Ancestral Agricultural land in village bagulya., Mother: Smt Krishna Raghuwanshi (home maker), Father Gotra: kervar, Mother Gotra: Dandir., Has 3 siblings Eldest Sister settled and working in London. Twin sister working in Pune And a youngest brother.

विवाह योग्य युवक-युवती

Name-**Shobha Raghuvanshi**, DOB- 11-04-1984 (Place of Birth- Dhar), Time- 9:15 am, Height- 5ft 2 inches, Qualification- Graduation: B.A.LL.B. & Post Graduation - LLM from National Law Institute University (NLIU), Bhopal, Director at Vansham Classes, Geeta Bhawan Square (Indore) , Family Details- Father – Pratap Singh Raghuvanshi, Advocate, Brothers – Sunil Raghuvanshi, Advocate & Dharmendra Raghuvanshi, Advocate. Father's Gotra- Maina, Mama Gotra- Barod, Residence Adress – 136, Trimurti Nagar, Dhar (Madhya Pradesh). Contact number – 9993071325, 9098713701, 9131257925. Mail - sunilraghuvanshiadv@gmail.com

Name - Ms. Shweta Raghuwanshi, Date Of Birth - 30th October 1984 - Akot -04:45am, Height - 5 ft 3", Education - Master of Commerce From DAVV, Indore, Industrial Accountant from ICA, Indore, M.B.A. (Finance) from IMS, Indore, Interest - Listening Music, Traveling, Cooking food, email - raghuwanshi.shweta@rediffmail.com, sh10_raghuwanshi@yahoo.co.in, Lives in - Indore(M.P.), Working status - Working as Officer in Bank Of India (Nationalized Bank, Govt. Undertaking) posted In Indore(M.P.), Family Background- Religion - Hindu-Kshatriya, Gothra (Self) - Songar, Gothra (Mama) - Pachalyya, Father - Shri Baldev Singh Songar (Govt employee-RevenueInspector), Mob. no.- 09425981220, 09575280803, Mother - Smt. Rajni (Housewife), Sister - Mrs. Megha Barod-elder (Married to Mr. Ranjeet Singh Barod), Brother - Gaurav-Younger (B. Pharma. ,M.B.A. RunningMedical Shope, Address - 127, Shrinath Colony, Diversion Road, Khargone(M.P.)

नाम - लाखन सिंह रघुवंशी, पिता का नाम - कमल सिंह रघुवंशी, माता का नाम - राजकुंवर रघुवंशी, निवास का पता - ग्राम व पोस्ट खजुरिया कलाँ, तहसिल श्यामपुर, जिला सिहोर, मध्य प्रदेश, गोत्र - कांद, मामा का गोत्र - मैना, जन्म तारीख - 11/06/1990, जन्म स्थान सिहोर, आईसीआईसीआई बैंक, सीहोर में कार्यरत, पिता का व्यवसाय - कृषि, बड़े भाई - आर्मी में पदस्थ, लम्बाई - 6 फिट, रंग गोरा, मोबाइल नं. 9425688502 9993991199

Name: **Raj Singh Thakur**, DOB: 12-7-1990, TOB: 3.15 Morning, POB: Indore, Hight: 5ft 10inch, Gotra: Kand and Khadia, Qualification: M.com First Division, From-DAVV University Indore. Diploma in Home Loan Advising From Indian Institute of Banking and Finance, Mumbai, Occupation: Branch Credit Manager in AADHAR, Housing Finance-A Dewan Housing Finance Group Company, Fathers Name: Eng. Mahendra Singh Thakur, Retired General Manager From Multi National Company, Consultant for Industrial Automatian, Mother: House Wife, Elder Brother and Sister: Married and well Placed in Jobs, Cont.: Mob.9827317216 and Phone-0731-2422359, Email : msthakur.indore@gmail.com.

डॉ. शिववरण सिंह रघुवंशी की कलाकृतियां

मोबाइल: 8978500103, 9441237470

कहानी

हम ही बदल गये

डॉ. स्वर्णसिंह रघुवंशी

अखती यानी आखातीज का त्यौहार मनाया जा रहा था। हरदयाल के बगीचे में मोहल्ले की सभी लड़कियां जमा थीं। मोहल्ले में सबसे अधिक उम्र की लड़की बीरो थी। सभी औरत-मर्द उसे बीरो कहकर ही बुलाते थे। बीरो की शादी के बाद उसे उसके पति ने छोड़ रखा था। यह बात पूरा मोहल्ला जानता था। इसी कारण मोहल्ले के लोग उससे अधिक ही सहानुभूति रखते थे। मोहल्ले के सभी कम उम्र के लड़के व लड़कियां उसे 'बीरो जीजी' कहकर ही पुकारते थे। बीरो जीजी भी सबकी चहेती थी। किसी भी जात का घर हो उनके बुलावे पर वह उनके घर के कामों में हाथ बंटाती थी। मोहल्ले के बुलऊओं में ढोलक वही बजाती थी। तब उस मोहल्ले से एकमात्र ढोलक बीरो के घर में ही तो थी। मोहल्ले की सभी लड़कियों को सिलाई-बुनाई और कढ़ाई के साथ-साथ लोहे के तार वाली फ्रेम पर ही रंगीन मोटे डोरे से पंखा बुनना सिखाने वाली इकलौती लड़की बीरो ही तो थी। इसी कारण सभी लड़कियों की वह लीडर थी।

अखती के ज्यौहार का सभी को इंतजार रहता था। छोटे लड़के-लड़कियां तो इतना ही जानते थे कि उस दिन उन्हें बाराती बनना है और गुड्डे-गुड़ियों की शादी के बाद बगीचे में दाल-बाटी-चूरमा खाने को मिलेगा, बस यही बात उन्हें पता थी। अखती के कुछ दिन पहले से मोहल्लों में कपड़े के गुड्डा-गुड़िया बनने शुरु हो जाते थे। सबसे सुंदर गुड्डे-गुड़िया तो बीरो जीजी ही बना पाती थी, यह बात सभी जानते थे।

आज वह दिन आ ही गया। मोहल्ले की जवान और छोटी-बड़ी सभी लड़कियां सज-संवर कर बीरो के घर पर इकट्ठा हो रही थीं। जिनकी हाल ही शादी हुई थी वे सबसे सुंदर साड़ी और गहने पहन कर आई थीं। दोपहर के बाद बीरो की ढोलक बज उठी। ढोलक की थाप सुनकर मोहल्ले के छोटे-छोटे लड़के भागते हुए बीरो के घर के बाहर वाले चबूतरे पर इकट्ठा होने लगे। उन्हें आज बाराती जो बनना था। सांझ के चार बजने का समय हो गया था, मोहल्ले की लड़कियां कमला, मुन्नी, विमला, कन्तो, मिन्दर हाथों में गुड्डा-गुड़िया लेकर बाहर चबूतरे पर आ गयीं।उनके पीछे-पीछे मोहल्ले की तीन-चार औरतें और ढोलक लिये बीरो भी आकर मिल गईं। हरदयाल का बगीचा मोहल्ले में पास ही था इसलिए काफी भीड़ हो गयी थी। जब ढोलक बजाती बीरो और गीत गाती औरतें-लड़कियों के साथ ऊधम मचाते लड़के गली से निकले तो मोहल्ले के लोग उन्हें खड़े होकर देखने लगे। ऐसा लग रहा था मानो सच में कोई बारात जा रही हो।

हरदयाल के बगीचे मे केवल जामफल के ही पेड़ थे। बगीचे में घुसते ही सड़क के सामने एक कुंआ था। मोहल्ले के सभी लोग सड़क वाले घाट से पानी भरते थे। जबकि बगीचे का अंदर वाला घाट बगीचे में पानी देने तथा उनके परिवार को उपयोग करने के लिये ही था। अखती के दिन उस घाट का उपयोग मोहल्ले की लड़कियों को करने की छूट थी। बीरो के साथ आई औरतों के हाथ में बाटी बनाने का सामान आदि था। बगीचे में घुसते ही वे औरतें बगीचे के खाली छोर की तरफ चली गईं जहां बाटी-दाल बनाई जाती थीं। आज के दिन बगीचे में जामफल के पेड़ों के नीचे झुण्ड बनाकर चार-चार, छः-छः के ग्रुप में लड़कियां बैठी थीं। बीरो का झुण्ड सबसे अच्छी जगह पर बैठा था। उस जगह को सभी लड़कियां जानती थीं और जब तक बीरो बगीचे में नहीं आती तब तक वह जगह खाली ही रहती थी। लड़कों के लिए बगीचे का दूसरा खाली छोर वाला हिस्सा होता था। लड़कों को पता था कि कोई भी लड़का लड़कियों के झुण्ड की तरफ नहीं जा सकता। वे तो मात्र बाराती ही हैं और बाद में उन्हें दाल-बाटी खाकर अपने घर चले जाना है।

गीत गाने-बजाने और गुड्डा-गुड़ियों के फेरे पड़ने तक दस-बारह की उम्र की किशोरियां उन झुण्डों में उपस्थित रह सकती थीं। उन्हें भी मालूम था कि हर वर्ष फेरे पड़ने के बाद उन्हें उठकर दूर चले जाना होता था और जो लड़की उठकर नहीं जाती थी उसे बीरो जीजी की डांट खाना पड़ती थी या फिर उसे बगीचे से ही बाहर कर दिया जाता था। दाल बाटी की लालसा और बीरो के भय ने उन सभी लड़कियों को अनुशासित बना दिया था। बीरो के झुण्ड में ही ढोलक की थाप और गीतों की आवाज सुनाई दे रही थी। गुड्डे-गुड़ियों के फेरे जो चल रहे थे। हर फेरे पर उन्हें कसम खिलाई जा रही थी। सात जनम तक साथ रहने की बात बताई जा रही थी। कम उम्र की लड़कियां फेरों के वचन को ध्यान से सुन रही थीं जबकि हाल ही में जिनका विवाह हुआ था वे और जिनका विवाह होने वाला था वे लड़कियां आपस में चुहलबाजी करती जा रही थीं। सभी लड़कियां गोल घेरे में बैठी थीं। केवल बीरो जीजी उनके पीछे खड़ी थीं। समय-समय पर वे

लड़कियों को निर्देश दे रही थीं।

गुड्डे-गुड़ियों के फेरे पूरे होते ही छोटे-छोटे सभी लड़के और लड़कियां उठकर दाल-बाटी खाने दौड़ पड़े। झुण्ड में केवल शादीशुदा और क्वांरी बड़ी लड़कियां ही मात्र थीं। गुड्डे-गुड़ियों के फेरों के बाद की रस्में जो उन्हें पूरी करना थीं। रस्में चल रही थीं। सायं का धुंधलका भी होने लगा था। बीरो को पता ही नहीं चला कि उनके पीछे आकर कब लुक्को खड़ी हो गई। अचानक लुक्को की दबी-दबी सी हंसी ने बीरो को सजग कर दिया। जैसे ही बीरो ने पलट कर देखा लुक्को खड़ी-खड़ी मुस्करा रही थी। लुक्को को इस तरह खड़ा देख बीरो का पारा चढ़ गया। लुक्को का हाथ पकड़कर उसे खींचती हुई दूर ले गई और फिर गुस्से से बोली- ''कायरी लुक्को तोय समझ नैं आय का..... तू इतैं काय आई.... जब तू बड़ी हो जायगी तब तोय सब समझ आ जायगी.....चल अब भग इयां से।''

लुक्को अब बूढ़ी हो चली है। पचास वर्ष बाद वह उस मोहल्ले में आई थी जहां उसका बचपन और जवानी बीती थी। उसे अखती के त्यौहार और गुड्डा-गुड़ियों की शादी वाली बातें याद आ रही थीं। अचानक उसके कदम बगीचे की ओर उठ गये। थोड़ी ही दूर पर तो था वह बगीचा। सड़क वही थी पर कच्ची से पक्की सी.सी. की बन गयी थी। उस जगह पर पहुंचकर उसने चारों को देखा पर न बगीचा दिखा न ही कुंआ। पूरे बगीचे में दो मंजिला मकान खड़े थे। ऐसा लग रहा था कि कोई नई कालोनी बस गई हो। मोहल्ले के सभी कच्चे खपरैल वाले मकान भी तो पक्के हो गये थे।

लुक्को को वह घटना याद आ गई जब बीरो ने उसका हाथ पकड़कर उसे डांटा था। कई बार उसने पूछने की भी कोशिश की थी किन्तु बीरो जीजी के डर से वह नहीं पूछ सकी थी। अपनी हम उम्र सहेलियों से भी कई बार जानना चाहा कि गुड्डे-गुड़ियों के फेरे के बाद का खेल कैसा होता है। परन्तु उसकी सहेलियों का एक ही जवाब होता था कि वे इस बारे में कुछ नहीं जानतीं। आज लुक्को की आंखों के आगे हरदयाल के बगीचे वाला वही पुराना दृश्य उभर कर आ गया। उस दिन उसने देखा था कि गुड्डे-गुड़ियों के फेरों के बाद मुन्नी जीजी ने जमीन पर छोटा सा गद्दा बिछाया था उस पर एक तकिया भी रख दिया था। फिर कमला जीजी और मुन्नी ने मिलकर उस गुड़िया की फरिआ और ब्लाउज उतार दिये थे। दूसरी ओर कन्तो गुड्डे का कुर्ता उतार रही थी। थोड़ी देर बाद गुड़िया को बिस्तर पर चित्त लिटा दिया गया और उसके ऊपर गुड्डे को औंधा रख ऊपर से एक कपड़े के चादर से ढंक दिया गया था। यह सब करते सभी बड़ी बहनें एक-दूसरे में धक्का दे-देकर खूब हंस रही थीं उस वक्त उनकी हंसी का मतलब समझ नहीं आ रहा था। तभी कन्तो ने मिंदर को पकड़ कर कहा था-''देख रे....मोसे तीन दिन तक हाथ मत लगाईये.....भगवान ने तोय हर महीने तीन दिनन को दण्ड दओ है.... तीन दिन तक अब तू ही पानी भरेगो और रोटी भी बनायेगो.... मैं तीन दिन तक कछु न करोंगी... और अकेली चटाई पे सोऊंगी'' कन्तो की बात पर सभी लड़कियां ठहाके मारकर हंस रही थीं। दूसरी तरफ विमला पेट पर कपड़े बांधकर फूले पेट का स्वांग करने लगी थी।

यह सब देखकर ही तो लुक्को को हंसी आ गई थी। उस समय उसकी उम्र मात्र दस बरस की थी, इस कारण उनका मतलब नहीं समझ पाई थी। बाद में उसे समझ आया कि अखती का त्यौहार और गुड्डे-गुड़ियों का खेल क्यों खेला जाता था। कितनी अच्छी परम्परा थी। खेल-खेल में तब लड़कियों को जिंदगी के गूढ़ अर्थों का ज्ञान कितनी सहजता से सिखा दिया जाता था। शादी और बाद की सभी समस्या, मासिक धर्म की ऋतुचर्या, गर्भावस्था और शिशु की देखभाल आदि का ज्ञान कितनी सहजता और मनोरंजन के साथ लड़कियों को मिल जाता था। अखती का त्यौहार उस समय लड़कियों की यौन शिक्षा का प्रमुख माध्यम था।

खड़े-खड़े लुक्को को याद आ रही थी उसकी बड़ी नातिन जिसके साथ उसके पड़ोसी के लड़के ने बलात्कार किया था। लोक-लाज के भय से उसकी शादी दूर के रिश्तेदार के घर कर दी गयी थी। याद आ रही थी छोटी नातिन। जिसको कई बार देर रात तक जागने की बात पर टोका भी था पर हर बार वह एक ही जवाब देती ''दादी तुम पुराने जमाने की हो.....तुमने लैपटॉप या मोबाइल से पढ़ाई कब की है.... मैं इन्हीं से पढ़ती हूं।'' बाद में उसकी पढ़ाई समझ में आई जब वह गैर बिरादरी के लड़के के साथ घर से भाग गई।

लुक्को सोच रही थी कि जमाना कितना बदल गया। मोहल्ले के बगीचों की जगह शहर में इंटरनेट कैफे खुल गये हैं। हर घर में टीवी, लैपटॉप और मोबाइल हो गये हैं। आजकल के बच्चे अधिक समझदार हो गये हैं। अब तो दस साल के बच्चे-बच्चियां भी शादी और प्यार का मतलब समझने लगे हैं। गुड्डे-गुड़ियों के खेल अब बच्चे-बच्चियां क्यों खेलें? सभी जानकारियां इंटरनेट और मोबाइल पर घर बैठे जो मिल जाती हैं। लगता है समय बदल गया। पर देखें तो कुछ भी तो नहीं बदला। सूरज-चंदा वही है, ऋतुएं भी वही हैं, हवा-पानी भी वही है, हमारे त्यौहार भी वही हैं, केवल परम्परा बदल गई है। अब आखातीज पर गुड्डे-गुड़ियों की शादी नहीं होती। उस दिन तो शासकीय विवाह सम्मेलन होते हैं। लोगों की मानसिकता बदल गई है या कहूं हम ही बदल गये।

-मोबाइल नं.-9425759098

कहानी

कहानी की नकल

सोनाली करमकर

न्यू प्रभात मैगजीन के संपादक साहब ने जैसे ही कहानियां चेक करने के लिए मेल बाक्स खोला, एक नाम देखकर वह चौंक गये। उनके पुराने लेखक मि. सन्याल साहब ने जो कहानी भेजी थी ठीक उसी शीर्षक की एक कहानी किसी नये लेखक ने भी भेजी थी। सन्याल साहब से कहना पड़ेगा कि वह अपने कहानी का शीर्षक कोई और अच्छा-सा भेजें। फिलहाल कहानी पढ़ी जाये। ये सोचकर संपादक साहब ने कहानी की पीडीएफ फाइल खोली। वह कहानी जैसे-जैसे पढ़ते गये, आश्चर्य उनके चेहरे पर उभरता गया। कहानी का एक-एक शब्द उस नये लेखक की कहानी से मिलता-जुलता था। उन्होंने तुरन्त सन्याल साहब को फोन लगाया।

हेलो, सन्याल साहब आपने जल्दबाजी में शायद किसी और की कहानी भेज दी है। अरे संपादक साहब, ये आप क्या कह रहे हैं? मैं कितना ही जल्दी में क्यूं न रहूं, ऐसे कैसे किसी और की कहानी भेजूंगा? मैंने अपनी ही कहानी भेजी है, सन्याल साहब कह उठे।

नहीं सन्याल साहब, ठीक यही कहानी मुझे एक नया लेखक आपसे पहले भेज चुका है, मैंने पढ़ ली है वह कहानी, तभी तो आपसे इतने यकीन के साथ कह रहा हूं ना। होता है ऐसा कभी-कभी, उस शख्स ने आपको चेक करने के लिए भेजी हो और आपने जल्दबाजी में मुझे भेज दी हो, कोई बात नहीं। आप अपनी कहानी भेज दें, अपनी बात खत्म करके संपादक साहब ने फोन कट कर दिया।

सन्याल साहब निजी काम से दो महीना शहर से बाहर उनके गांव गए थे, जहां नेटवर्क मिलना मुश्किल था, सो कहानी लिखकर भी कोई फायदा नहीं था क्योंकि वे भेज सकते नहीं थे। उन्होंने सोचा शायद संपादक साहब को कुछ गलतफहमी हुई हो, इस अंक में कहानी न छपे तो कोई बात नहीं, वापस जाने पर फिर से भेज दूंगा।

न्यू प्रभात मैगजीन में उनकी कहानी नहीं छपी। सन्याल साहब भी दो-ढाई महीने गांव में व्यस्त रहे। वापस आने के बाद उन्होंने फिर से एक नई कहानी लिखी। देर रात तक कहानी में लगे रहे। दूसरे दिन दोपहर तक न्यू प्रभात मैगजीन में भेजने का सोच वह सोने चले गये। दूसरे दिन सन्याल साहब ने साढ़े ग्यारह बजे के आसपास न्यू प्रभात मैगजीन को कहानी मेल कर दी। संपादक साहब ने जैसे ही अपना मेल बाक्स ओपन किया सन्याल साहब की मेल देखकर उन्होंने उसे ओपन किया। पिछली बार की तरह इस बार भी सेम कहानी का शीर्षक देखकर उनका माथा ठनका। उन्होंने सन्याल साहब को फोन करके अपने लेपटॉप के साथ बुलाया। सन्याल साहब आकर बस बैठे ही थे के संपादक साहब ने अपना लेपटॉप उनके आगे रखा-''ये देखिए सन्याल साहब, ये उसी नये लेखक की कहानी है जो आपने पता नहीं कापी की है या वैसी की वैसी भेजी है। दोनों की कहानी में रत्तीभर भी फर्क नहीं है। मुझे आपसे ये उम्मीद नहीं थी। इस तरह नये लेखकों का हौसला पस्त मत कीजिए जनाब।''

''अरे रुकिए तो साहब, आप इस तरह आरोप मत लगाइए मुझे बोलने का मौका तो दीजिए। मैंने कोई कहानी कापी नहीं की और न ही किसी की कहानी मेरे नाम से आपको भेजी है।''

दोनों के तेवर चढ़ गए थे। वैसे दोनों अपनी जगह सही थे इसलिए कोई झुकना नहीं चाहता था। सन्याल साहब ने वो कहानी पढ़ी तो उन्हें भी आश्चर्य लगा, क्योंकि उस कहानी का एक-एक शब्द उनकी अपनी कहानी से मिलता-जुलता था। 'ये कैसे हो सकता है साहब? मैं तो आपके इस लेखक को जानता तक नहीं और ये कहानी मैंने कल रात खुद लिखी है। वैसे आपको ये कहानी कब मिली? सन्याल साहब ने पूछा।' 'मुझे मेल द्वारा कहानी आज सुबह मिली लेकिन आपकी मेल मिलने से काफी पहले, संपादक कह उठे।' अपने-अपने विचार में दोनों खामोश बैठे रहे।

तभी संपादकजी के बेटे गोविंद का वहां आगमन हुआ, जो इत्तिफाक से सायबर सेल में इंस्पेक्टर था।' अरे क्या बात है? यहां का माहौल इतना उखड़ा हुआ क्यों है भाई? गोविंद ने उन दोनों को खामोश देखकर पूछा। ''अरे बेटे, तुम तो सन्याल साहब को जानते हो न, तो हुआ यूं कि..... उन्होंने उसे सारा माजरा बताया। 'सन्याल साहब, आपका क्या कहना है? गोविंद ने बातों का रुख सन्याल साहब की तरफ मोड़ा।' आपने अपनी कहानी किसी को पढ़ने को दी थी क्या? 'नहीं गोविंद, मैंने देर रात को कहानी लिखी और आज सुबह इन्हें मेल कर दी। मेरे अलावा किसी ने भी नहीं पढ़ी। समझ नहीं आता कि ये माजरा क्या है? 'लेकिन सन्याल साहब, मुझे कुछ-कुछ समझ में आ रहा है! एक बात बताइये, क्या आप एक बार में ही पूरी कहानी लिख लेते हो, गोविंद ने पूछा।

'हां गोविंद! मैं छोटे-छोटे नोट्स बनाकर रखता हूं, कहानी लिखते वक्त वह नोट्स सामने होते हैं। चाहे चार-पांच घंटे क्यों न लगें पर मैं लिखता एक बार में ही हूं और हां, मैं हमेशा रात में ही लिखता हूं, रात को तनहाई में मन में बस कहानी होती है।'

'तो सन्याल साहब, आप एक काम करना, अगले सोमवार आप फिर से एक कहानी लिखना, लिखकर छोड़ देना। एक दिन बाद उस कहानी का अंतिम पैरा पूरी तरह बदल देना और हां बाद में जो तब्दीलियां होंगी वह आप मेरे लेपटॉप से करेंगे। मतलब पहली कहानी आप अपने लेपटॉप पर लिखकर छोड़ दें, बाद में उसे

पेनड्राइव द्वारा मेरे लेपटॉप पर लें और उसका पैरा चेंज करें, ठीक है? बाद में जब मिलेंगे तो सारी बातें विस्तार से बताऊंगा। अभी एक तहकीकात के सिलसिले में मुझे बाहर-गांव जाना है, जाते-जाते मैं पापा को बाय करने ही आया था। हम अगले हफ्ते आपके घर मिलते हैं और हां पापा आप इनको आपके उस लेखक महाशय का मेल आयडी मत बताना, अब मैं चलता हूं, कहकर गोविंद निकल गया। सन्याल साहब भी वहां से रुखसत हो गये।

पूरे एक हफ्ते तक वह कहानी पर विचार करते रहे। छोटे-छोटे नोट्स बनाये और सोमवार की रात लिखने बैठे। जैसा कि गोविंद ने बताया था वैसे ही उन्होंने कहानी के दो अन्त बनाये। दूसरे दिन उन्होंने गोविंद को फोन करके ये बात बताई। ठीक है सन्याल साहब! मैं आज रात आठ बजे तक आपके घर पहुंचता हूं। ठीक है गोविंद, मुझे आपका इंतजार रहेगा, सन्याल साहब ने इतना कहकर फोन कट कर दिया। दिन भर सन्याल साहब रात के इंतजार में छोटे-मोटे काम करते रहे। गोविंद आठ बजने से पहले ही आ गया।

'सन्याल साहब, पेनड्राइव से आप अपनी कहानी मेरे लेपटॉप में लें और जिस तरह मैंने बताया था उसका लास्ट पैरा बदलें। पैरा थोड़ा लम्बा हो तो और भी अच्छा है।' सन्याल साहब गोविंद ने जैसा कहा करते रहे। कहानी पूरी होने पर उसकी पीडीएफ फाइल बनाकर 'न्यू प्रभात' को मेल कर दी गई। उसके बाद गोविंद ने न्यू प्रभात में उसके पापा को फोन किया। 'हेलो पापा! क्या आपके उस नये लेखक ने सुबह कोई कहानी आपको मेल की है? 'अरे हां बेटे, पर तुम्हें कैसे पता?, उन्होंने पूछा, 'वो छोड़ो पापा, अभी-अभी सन्याल साहब ने कहानी मेल की है, आप उसे अंत तक पढ़िये प्लीज। पढ़ने के बाद मुझे पक्का फोन करें।' गोविंद को फोन से फारिग होता देख- सन्याल साहब ने पूछा-गोविंद बात क्या है? अब तो बताइए।'

सन्याल साहब, मुझे पहले ये बताइए कि क्या आपने पिछले एक-दो महीने में कोई फोटो डाउनलोड किया था जो मेल द्वारा भेजा गया हो? ''हां! आप तो जानते ही हो कि मैं सालों से लिख रहा हूं। अनगिनत फोन, पत्र, मेल आते रहते हैं। ऐसे ही किसी मेरे चाहने वाले ने एक मेल भेजी थी जिसमें फूलों का गुलदस्ते वाला एक फोटोनुमा ग्रीटिंग था, उस ग्रीटिंग में अच्छा संदेश लिखा था। वो मैंने डाउनलोड किया था, पर उसका क्या?'' ''अरे साहब, वो कोई आपका चाहने वाला नहीं था, मुझे शक है कि उसने आपके लेपटॉप में वायरस छोड़ दिया है जिसे 'किलॉगर' कहते हैं। अब वो वायरस आपके की-पैड पर सेट हो गया है। आप जो भी 'की' प्रेस करोगे उधर उसके लेपटॉप पर छप जायेगा। आपकी कहानी उसने ऐसे ही चुरायी होगी। अब पापा का फोन आये तो इस बात पर मुहर लग जायेगी।''

आधे घंटे बाद गोविंद का मोबाइल बजा। ''हेलो गोविंद, ये तो चमत्कार हो गया। एक जैसी कहानी दोनों की है। फर्क बस इतना है कि सन्याल साहब का आखिरी पैरा जिसमें उन्होंने कहानी को अंजाम दिया है वह काफी अलग है।''

पापा आपके उस नये लेखक की मेल आपको कब मिली थी? गोविंद ने पूछा, ''आज सुबह मिल गयी थी और सन्याल साहब की अभी थोड़ी देर पहले, लेकिन ये चक्कर क्या है?''

वो मैं आपको बाद में बताता हूं, ये सायबर क्राइम का मामला है, आप एक काम करें, आप उस लेखक महाशय को एक मेल भेजें कि उसकी कहानी 'कहानी प्रतियोगिता' में चुनी गई है, कल आकर अपना ईनाम ले जायें। कल उसे शाम चार बजे तक बुलायें, मैं भी वहां रहूंगा, ताकि हम उसे पकड़ सकें। और फिर जैसा कि गोविंद ने जाल बुना था, दूसरे दिन वह लेखक महाशय ईनाम लेने पहुंचे और आसानी से उस जाल में फंस गये।

''धन्यवाद गोविंद! आप पुलिस वाले हो इसलिए ये बात तुरन्त ही समझ गये वरना मेरे कैरियर के साथ-साथ ये मेरा नाम भी खराब करता।''

'सन्याल साहब ये तो हमारा काम ही है, खैर आइन्दा ख्याल रहे कि किसी अजनबी द्वारा भेजा गया कुछ भी डाउनलोड ना करें। इस बारे में हमेशा सजग रहिएगा। कल मैं आपके लेपटॉप से वायरस क्लीन कर दूंगा। फिर कोई दिक्कत नहीं। वैसे पापा के लेपटॉप में एन्टी-वायरस है और बीच-बीच में मैं चेक भी करता हूं। आपको भी सिखा दूंगा। अब चलूं? मुझे इन महाशय को चौकी ले जाना है, गोविंद ने उठते हुए कहा।

उस नये लेखक सायबर चोर को गोविंद के साथ जाता देख सन्याल साहब के साथ-साथ संपादक साहब ने भी राहत की सांस ली।

रघुकुल युवा संघ ने की अग्नि पीड़ितों की सहायता

सिवनी मालवा (राममोहन रघुवंशी)। विगत माह विकासखंड सिवनी मालवा के ग्राम खटकड़ में ब्रजकिशोर पिता बलराम मालवीय के मकान में आग लगने से कपड़े-बर्तन एवं सभी गृहस्थी का सामान जलकर नष्ट हो गया था। रघुकुल युवा संगठन सिवनी मालवा द्वारा समाज की ओर से पीड़ित परिवार को सहायता प्रदान की गई। तहसीलदार प्रमेश जैन एवं नायब नाजिर बिशन सिंह रघुवंशी की उपस्थिति में कपड़ा, बर्तन एवं किराना सामग्री पीड़ित परिवार को दी गयी। इस अवसर पर युवा संगठन के धर्मेंद्र रघुवंशी, मुकेश रघुवंशी, प्रवीण रघुवंशी, मोनू रघुवंशी, भोला रघुवंशी, प्रमोद रघुवंशी, जयप्रकाश रघुवंशी, गोलू रघुवंशी और हिमांशु रघुवंशी आदि उपस्थित थे।

अपने गौरव को पहचानिए और उसकी रक्षा कीजिए

जगन्नाथ सिंह रघुवंशी मैयर

आज के मनोवैज्ञानिकों तथा विज्ञानवेत्ताओं ने जो सबसे बड़ी खोज की है वह यह है कि इस हाड़-मांस के मनुष्य कहलाने वाले प्राणी की मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक शक्तियां असीम, अनन्त और अलौकिक हैं। प्राचीनकाल में ऋषियों ने जिस ज्ञान-विज्ञान की चर्चाएं शास्त्रों में की हैं, आज उनके करिश्मे प्रत्यक्ष नजर आ रहे हैं।

मनुष्य का सम्मान इस बात में नहीं है कि उसे विपुल धन का स्वामी, अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, कलाकार, रुपवान, बलशाली या नेता माना जाए। यह धन-रुप-बल आदि तो मानव के भौतिक शरीर की पार्थिव आवश्यकतायें हैं, जो परिवर्तनशील तथा नितान्त अस्थायी रहती हैं। आज यदि अच्छी और प्रशंसनीय स्थिति है तो कल परिस्थितियों के हेर-फेर से उसका बुरा और निंदनीय बन जाना असंभव नहीं है। मनुष्य का सच्चा गौरव इस तथ्य में है कि उसे मानवीय गुणों से सम्पन्न, सभ्य और सुसंस्कृत कहा जाए। लोग उसे सज्जन का संबोधन दें। उसका प्रयत्न यह होना चाहिये कि वह मानवत्व से नीचे न गिर जाये। इस धरती पर जब-जब स्वर्ग का सुख बिखरा है तब-तब मानवता के सदगुणों का प्राधान्य रहा है। हम भगवान न बन सकें न सही, वह बहुत ऊंचा आदर्श है, हम देवता भी न बन पायें तो कोई हर्ज नहीं, क्योकि पूरी तरह विकार रहित होना सम्भव नहीं है। पर यदि हम सच्चे अर्थों में मनुष्य बन जायें, मानवोचित गौरव प्राप्त कर लें तो यही बहुत है।

मनुष्य की महत्वाकांक्षा यह होनी चाहिये कि उसके पास मानवीय सदगुणों का विपुल भंडार अधिकाधिक मात्रा में संग्रहित रहे। किसी की प्रगति, किसी की सफलता एवं बुद्धिमत्ता की यही सर्वोत्तम कसौटी है कि वह पाशविक दोष, दुर्गुणों को परास्त करता हुआ अपने मानवोचित दिव्य गुणों को बढ़ावें और अपने सामाजिक, पारिवारिक, नैतिक तथा धार्मिक जीवन क्रम को अनुकरणीय बनावें। आत्म परिष्कार से बढ़कर मनुष्य जीवन की सफलता और कुछ नहीं हो सकती।

आप परिस्थितियों पर निर्भर न रहें

चतुर और दूरदर्शी व्यक्ति परिस्थितियों से विशेष लाभ उठाते हैं। यह ठीक है कि परिस्थितियां हमें अपनी रुचि के अनुसार जिधर चाहें मोड़ देती हैं परन्तु दृढ़ व्यक्तित्व उनका है जो स्वयं परिस्थितियों को अपने लाभ और विकास के लिये प्रयोग में लाते हैं। जो लोग सर्वथा परिस्थितियों पर ही निर्भर रहते हैं, जिन व्यक्तियों को केवल परिस्थितियां ही विनिर्मत करती हैं, वे उन उपयोगी परिस्थितियों के समाप्त होते ही नष्ट भी हो सकते हैं।

दूसरों की कृपा पर टिके रहना कायरता और निर्बलता है। जो दूसरों के कंधों पर बैठकर चलेंगे वे एक न एक दिन गोद से उतार दिये जायेंगे। जिस वीर ने निजी आत्मबल और खुद की शक्तियों पर आत्मनिर्माण किया है उसकी स्थिरता परिस्थितियों की अनुकूलता या प्रतिकूलता के अधीन नहीं रहती। वह अपने गुप्त आत्मबल के सहारे आगे बढ़ता है। इसलिए उचित यही है कि अपनी आत्मा की पुकार को सुना जाए और विवेक से काम लिया जाए। इन्हीं के आधार पर भावी उन्नति की योजनायें बनायी जायें। आपके मन में उन्नति के जो विचार आते हैं उनका दमन ठीक नहीं है। बुद्धि सदा आपको ऊंचा उठने का संदेश देती रहती है। विवेक और बुद्धि का सही उपयोग करते हुए हमें स्थायी उन्नति की दिशा में सोचना चाहिये। कोई आदमी कितना ही साधारण क्यों न हो उसका विवेक कभी न कभी अवश्य जाग्रत हो उठता है। यदि वह अपने प्रति ईमानदार है तो उसके विचार ठीक ही दिशा में चलेंगे।

अनेक बार ऐसा होता है कि बात या अपने निर्णय को विवेकपूर्ण समझते हुए भी आदमी भय अथवा दबाव के कारण अपने विचार सही प्रकार से प्रस्तुत नहीं कर पाता। यह कायरता ठीक नहीं है, जो मनुष्य अपने विचारों को ठीक समझता है और यह विश्वास रखता है कि वह समाजहित को देखते हुए ठीक दिशा में सोचता है तो उसे अपने विचार अवश्य व्यक्त करने चाहिये।

अपने को ऊंचा उठाने की प्रेरणा की उपेक्षा न करें

मनुष्य ऊंचा उठने और महान बनने के लिए जन्मा है। ईश्वर का सशक्त पुत्र होने के नाते उसे सर्वशक्तिमान परमात्मा के समस्त गुण धरोहर के रुप में मिले हैं। अनेक बार आपके मन में ऊंचा उठने और बड़ा बनने की महत्वाकांक्षा जाग्रत होती है। विवेक कहता है कि आप भी बड़े आदमी बनें। गौरवशाली पद प्राप्त करें। यह आत्म-प्रेरणा उदीयमान व्यक्ति के अन्तःकरण से हर क्षण उठती रहती है। खेद है कि आप अपने मन की इस आवाज को सुनते नहीं, इसकी ओर ध्यान ही नहीं देते। यह क्षीण होकर मर जाती है। अपनी आत्म-प्रेरणा को सुनिये कि वह क्या संदेश दे रही है। आपकी सद्चित्त, आनंद स्वरुप आत्मा निरन्तर अपनी महानता की, अपने दिव्य-गुणों को विकसित करने और हर प्रकार की उन्नति की मांग करती है। अपनी कठिनाइयों से लड़े बिना साहस जैसी वीरोचित विभूति कैसे मिलेगी।

------■■------

प्रीति रघुवंशी को रघुवंशी समाज ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

उदयपुरा (सुरेंद्रसिंह रघुवंशी)। उदयपुरा निवासी चंदनसिंह रघुवंशी की पुत्री प्रीति रघुवंशी की तेरहवीं के अवसर पर बड़ी संख्या में रघुवंशी समाज के रायसेन, होशंगाबाद सहित विभिन्न अंचलों से आये लोगों ने भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा यह संकल्प व्यक्त किया कि जब तक प्रीति को न्याय नहीं मिलेगा तब तक समाज का संघर्ष जारी रहेगा। रघुवंशी समाज के अलावा अन्य समाज के लोगों ने भी प्रीति को श्रद्धांजलि देते हुए उसे न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया। उल्लेखनीय है कि प्रीति रघुवंशी का विवाह लोक निर्माण मंत्री रामपाल सिंह के बेटे गिरिजेश सिंह से आर्य समाज मंदिर में हुआ था लेकिन बाद में गिरिजेश की सगाई एक अन्य लड़की से हो गई जिससे दुखी होकर प्रीति ने आत्महत्या कर ली।

प्रीति के परिवारजनों व रघुवंशी समाज की मांग है कि रामपाल सिंह को मंत्रिमंडल से हटाया जाए और प्रीति आत्महत्या मामले में जितने भी लोग जिम्मेदार हैं उनके विरुद्ध तत्काल कड़ी कार्रवाई की जाए। प्रीति को श्रद्धांजलि देने पहुंचने वाले मुख्य लोगों में पूर्व केंद्रीय मंत्री द्वय ज्योतिरादित्य सिंधिया एवं सुरेश पचौरी तथा मध्यप्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री द्वय जसवंतसिंह और वीरसिंह रघुवंशी शामिल थे। अखिल भारतीय रघुवंशी :क्षत्रिय: महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हजारीलाल रघुवंशी भी श्रद्धांजलि देने उदयपुरा जाने वाले थे लेकिन अचानक उनका स्वास्थ्य कुछ बिगड़ जाने के कारण वे इसमें नहीं पहुंच पाये। लेकिन महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष पी एस रघु, महासचिव उमाशंकर रघुवंशी, कोषाध्यक्ष शिववरण सिंह रघुवंशी, हाकमसिंह रघुवंशी नौनिया बरेली तथा रामेश्वर रघुवंशी, चतुरनारायण रघुवंशी एडवोकेट, सुरेंद्र सिंह रघुवंशी, बलवंतसिंह रघुवंशी, मुकेश रघुवंशी, बृजेश रघुवंशी, प्रवीण रघुवंशी, देवेन्द्र रघुवंशी, भूपेन्द्र रघुवंशी, शिवकुमार रघुवंशी, मनोज रघुवंशी एवं आदित्य रघुवंशी भोपाल, रायसेन जिला अध्यक्ष बालमुकुंदजी रघुवंशी :बाबूजी:, शक्तिसिंह रघुवंशी, कुलदीप सिंह पटेल, राज रघुवंशी, लखनलाल रघुवंशी, सुमेर सिंह पटेल, राजकुमार रघुवंशी, विनोद रघुवंशी, पुरूषोत्तम रघुवंशी, जिला होशंगाबाद, राजेंद्र एवं रमण सिंह उज्जैन, संजय सिंह गजार विदिशा, सिलवानी रघुवंशी समाज ब्लाक अध्यक्ष महेश रघुवंशी मुंयार, उदयपुरा ब्लाक अध्यक्ष कृपाल सिंह रघुवंशी सहित हजारों की संख्या में सामाजिक बंधु उपस्थित थे। चंदन पिपलिया में भी रघुवंशी क्षत्रिय महासभा द्वारा प्रीति को श्रद्धांजलि देने का कार्यक्रम रखा गया जिसमें ज्योतिरादित्य सिंधिया ने भी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। भगवान श्रीराम दरबार का पूजन कर भगवान से प्रीति की आत्महत्या के दोषियों को सबक सिखाने की प्रार्थना की गई। चंदन पिपलिया में श्रद्धांजलि देने वालों में शक्तिसिंह रघुवंशी होशंगाबाद, संजय सिंह विदिशा, राजेंद्र सिंह उज्जैन, सुरेंद्र सिंह, महेश पटेल, बलवंत सिंह रघुवंशी और रायसेन जिले के रघुवंशी समाज के पूर्व जिलाध्यक्ष गोविंद नारायण सिंह सहित विभिन्न सामाजिक संगठनों के सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

विवाह संबंधी रीति-रिवाजों में परिवर्तन जरूरी

अशोकनगर (ओमवीर सिंह रघुवंशी)। रघुवंशी वूमेन वेलफेयर सोसाइटी अशोक नगर के तत्वाधान में स्थानीय रघुवंशी धर्मशाला में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। समाज में व्याप्त सामाजिक परंपराओं को आधुनिक रूप एवं रीति रिवाजों को बढ़ावा देकर समाज को इनके बोझ तले दबा दिया जाता है अपनी झूठी शान के लिए बढ़-चढ़कर चलन करना हमारे रीति रिवाज मूलतः विवाह से संबंधित गतिविधियों में कुछ परिवर्तन लाए जाएं ताकि सभी की आर्थिक सामाजिक और व्यापारिक प्रगति हो सके हम लोग लड़कियों की शादी में महज दिखावे के लिए बहुत सी अनावश्यक रीतियों को मानते हैं उन पर धन खर्च करते हैं तथा कहीं-कहीं विवाद भी उत्पन्न करते हैं जो संबंधों में खटास लाता है और इनके चलते ना जाने कितनी ही योग्य लड़कियां अच्छे रिश्तो से वंचित हो जाती है। हम जानते हैं कि लड़के बालों की अपेक्षाएं,लड़की बालों की आर्थिक सीमाओं को नहीं समझती।चूंकि सभी परिवारों की आर्थिक स्थिति एक जैसी नहीं होती। प्रतिस्पर्धा के चलते आज हर कोई अपनी हैसियत से अधिक करने का प्रयास कर रहा है। इसलिए रघुवंशी वूमेन वेलफेयर सोसाइटी ने एक छोटी पर प्रभावी पहल की और समिति द्वारा एक महिला सम्मेलन का आयोजन कर कुछ सामाजिक बुराइयों को दूर करने का संकल्प लिया ताकि हम अपने उद्देश्य में सफल होकर समाज को नई दिशा एक नई सोच देकर लड़की पक्ष को आर्थिक ऋणी बनने से बचा सकें एवं समाज को उत्कृष्टता की ओर ले जा सके। इस पर मैंने अपने विचार रखे एवं रघुवंश वुमेन वेलफेयर सोसाइटी की अध्यक्ष श्रीमती सीमा रघुवंशी एवं सोसायटी की सदस्य तथा सभी रघुवंशी महिलाओ के साथ मिलकर संकल्प लिया। आगे से जो समाज में व्याप्त सामाजिक बुराइयो पर अंकुश लगाने के लिए पहल कर के फालतू के नेगाचार बन्द करने की पहल की जाए। अन्त में इन चार लाइनों के साथ इस महिला सम्मेलन का समापन हुआ-

मेरे महान रघुवंश कुल में कैसी व्यथा बाधा आई है। बहू अंगना में तुलसी पूजे सास पूछे बहू पूजा संग गहना कौन सा लाई है। ऐसे ही कुछ तानों से आहत मन को लेकर वो बहू सास को मां नहीं मान पाई है। इन नेगों को बंद करो सम्मान करो इस लक्ष्मी का जो अपना घर छोड़ कर तुम्हारे घर आई है।

रघुकुल युवा संगठन द्वारा मनाया गया रामनवमी का पर्व

सिवनी मालवा। रघुकुल युवा संगठन सिवनी मालवा के द्वारा रामनवमी का पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। शहर के उप नगर बानापुरा के राम मंदिर में सुंदरकांड का आयोजन किया गया तथा बानापुरा के खेड़ापति मंदिर से भगवान राम की शोभा यात्रा निकाली गई। जगह जगह पर शोभा यात्रा का स्वागत किया गया। पूरा शहर गुलाबी एवं भगवा रंग में सराबोर हो गया। जगह जगह पर स्वागत करते हुए पुष्प वर्षा एवं जलपान कराया गया। राम जुलूस का मुस्लिम समाज ने भी भव्य स्वागत किया। मुस्लिम समाज के लोगों द्वारा रामनवमी पर निकल रही शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत कर शहर की गंगा जमुनी तहजीब का नजारा पेश किया। रामनवमी पर्व पर पुलिस प्रशासन भी मुस्तैद रहा। रामनवमी के दिन शहर पूरी तरह से राममय हो गया। रघुकुल युवा संगठन द्वारा निकाले गए जुलूस में जय श्री राम एवं जय हनुमान के नारे गूंज रहे थे। शोभा यात्रा का समापन हनुमान मंदिर के पास हंसराज गार्डन में संपन्न हुआ। समापन अवसर पर महाआरती का आयोजन किया गया। महा आरती के पश्चात कक्षा 10वीं एवं 12वीं के प्रतिभावान छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया। कक्षा 12वीं में 2016 17 में अधिक अंक लाने वाले छात्रों कुमारी वैष्णवी रघुवंशी अनुराग रघुवंशी दुर्गेश रघुवंशी कुमारी सलोनी रघुवंशी अभिषेक रघुवंशी सरिता रघुवंशी मोनिका रघुवंशी सलोनी रघुवंशी अजय

रघुवंशी आकांक्षा रघुवंशी और कक्षा दसवीं में कुमारी रिद्धि रघुवंशी अक्षत रघुवंशी शिखा रघुवंशी मोहित रघुवंशी राहुल रघुवंशी आदित्य रघुवंशी अंजलि रघुवंशी आरती रघुवंशी, इसके साथ ही सामाजिक कार्यों एवं अन्य क्षेत्र में भी कार्य करने पर रोहित रघुवंशी, शिवांश रघुवंशी, पवन रघुवंशी, गौतम रघुवंशी को सम्मानित किया गया। रामनवमी पर्व पर खास बात यह रही कि इस वर्ष समाज के बुजुर्गों को शाल एवं श्रीफल से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में गणगौर मंडल द्वारा शानदार प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम समापन के पश्चात खिचड़ी का स्वल्पाहार कराया गया।

उज्जैन में सामाजिक बंधुओं ने मनायी रामनवमी

उज्जैन (संजय रघुवंशी)। मध्यप्रदेश विकास परिषद उज्जैन एवं महिला मंडल रघुवंशी समाज उज्जैन द्वारा रामनवमी के अवसर पर चल समारोह निकाला गया एवं भगवान श्रीराम की आरती उतारी गई। इसके साथ ही इस अवसर पर रघुवंशी धर्मशाला आगर रोड उज्जैन में समारोह के बाद मंत्री रामपाल सिंह का पुतला दहन करते हुए उन्हें मंत्रिमंडल से हटाने और समाज की बेटी प्रीति रघुवंशी को न्याय दिलाने की मांग की गई। इस अवसर पर रघुवंशी समाज के बाबूलाल रघुवंशी, अशोक रघुवंशी, रमेश रघुवंशी, संजय रघुवंशी, शिव रघुवंशी, महेंद्र रघुवंशी, रानी रघुवंशी, संध्या रघुवंशी, सुनीता रघुवंशी, रंजना रघुवंशी उपस्थित थीं। रघुवंशी समाज की महिलाओं द्वारा चल समारोह का स्वागत किया गया।

'रघुकलश' त्रैमासिक पत्रिका के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से सम्बन्धित विवरण

घोषणा

फार्म-4

1.	प्रकाशन स्थल	: भोपाल
2.	प्रकाशन अवधि	: त्रैमासिक
3.	मुद्रक का नाम	: अरुण पटेल
	क्या भारत का नागरिक है	: हां
	पता	: ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल
4.	प्रकाशक का नाम	: अरुण पटेल
	क्या भारत का नागरिक है	: हां
	पता	: ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल
5.	संपादक का नाम	: अरुण पटेल
	क्या भारत का नागरिक है	: हां
	पता	: ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: अरुण पटेल

मैं अरुण पटेल एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर
अरुण पटेल
(प्रकाशक के हस्ताक्षर)

दिनांक : 28/02/2018

देवास में धूमधाम से मना रामजन्म उत्सव

देवास । 25 मार्च रामनवमी के अवसर पर यहां क्षत्रिय रघुवंशी समाज देवास द्वारा रामजन्म उत्सव का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम और श्रद्धापूर्वक भक्तिभाव से मनाया गया। प्रातः नौ बजे से सुंदरकांड का प्रारंभ हुआ और इसमें पश्चात प्रभु श्रीराम की आरती उतारी गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि देवास विधायक गायत्री राजे पवार थीं, जिनके करकमलों एवं सामाजिक बंधुओं के द्वारा प्रभु श्रीराम की आरती उतारी गयी। इसके बाद सभी सामाजिक बंधुओं ने परिवार सहित भोजन प्रसादी गहण किया। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष हिम्मत सिंह रघुवंशी ने एवं आभार सचिव ओमप्राकश रघुवंशी ने किया। इस अवसर पर कार्यकारिणी के सभी सदस्यों सहित सामाजिक बंधुओं ने बड़ीर संख्या में शिरकत की। जिलाध्यक्ष विजय सिंह रघुवंशी ने उन सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया जिन्होंने रामजन्म उत्सव कार्यक्रम के तहत सौंपी गयी जिम्मेदारी का पूरी निष्ठा से निर्वहन किया। श्री रघुवंशी ने कहा कि पन्द्रह-बीस दिनों तक सभी कार्यकर्ता पूरे प्राणपण से आयोजन की सफलता मे

जुटे रहे, इसलिए मैं उन सभी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद देता हूं। उन्होंने कहा कि भविष्य में हम सामाजिक बंधुओं के बीच और भी कार्यक्रम देने का प्रयास करेंगे। हमारी सक्रियता ही हमारी सफलता है। श्री रघुवंशी ने कहा कि वे विशेष रुप से स्थानीय विधायक श्रीमंत गायत्री राजे पवार का विशेष आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अल्प सूचना पर उपस्थित होकर समाज को महत्व दिया।

गुना में निकला रामनवमी का चल समारोह

गुना । रामनवमी के अवसर पर रघुवंशी समाज द्वारा गुना में चल समारोह निकाला गया जिसका स्वागत रघुवंशी समाज की महिलाओं ने किया। इस अवसर पर महिला समाज की अध्यक्ष अनुसुइया रघुवंशी, तृप्ति रघुवंशी, संध्या रघुवंशी, विनीता रघुवंशी, प्रेरणा रघुवंशी, कीर्ति रघुवंशी, महादेवी रघुवंशी, लक्ष्मी रघुवंशी, हीरा रघुवंशी, लीला रघुवंशी, सरोज रघुवंशी तथा आरती रघुवंशी उपस्थित थीं। समारोह के अवसर पर भगवान श्रीराम की आरती के बाद दो मिनट मौन रखकर प्रीति रघुवंशी को श्रद्धांजलि दी गयी।

अपील

रघुवंशी समाज सोहागपुर द्वारा मृत्यु भोज पर प्रतिबंध

दिनांक 13 जनवरी 2018 को समस्त रघुवंशी समाज सोहागपुर की बैठक श्री राजेंद्र सिंह चौधरी के निवास पर आयोजित की गई। सर्वसम्मति से निम्नानुसार निर्णय बैठक में लिए गए:

1. समाज में मृत्युभोज प्रतिबंधित किया जाए।
2. अन्य समाज के मृत्यु भोज में जाना प्रतिबंधित रहेगा।
3. शोक संदेश कार्ड प्रतिबंधित किए गए।
4. मृत्यु भोज के बाद की सभी रस्में पूर्ण तरह प्रतिबंधित रहेंगी।

विशेष:- यदि लिए गए उपरोक्त निर्णयों के विपरीत सामाजिक बंधुओं द्वारा कुछ किया जाता है तो समाज द्वारा उसका बहिष्कार किया जाएगा।

अतः सभी सामाजिक बंधुओं से निवेदन है कि सामाजिक निर्णय के अनुसार सहयोग करें

नगर सोहागपुर एवं आसपास के ग्रामों में निवासरत सभी सामाजिक बंधुओं से रघुवंशी समाज सोहागपुर द्वारा लिए गए निर्णय के परिपालन में सहयोग की अपेक्षा की जाती है। उपरोक्त निर्णय में सहयोग प्रदान करें।

निवेदक

समस्त रघुवंशी समाज, सोहागपुर

प्रीति को न्याय न मिलने से आक्रोशित रघुवंशी समाज

भोपाल। रायसेन जिले के उदयपुरा निवासी चंदनसिंह रघुवंशी की बेटी प्रीति रघुवंशी के दुखद आत्महत्या प्रकरण पर पुलिस द्वारा कोई कार्रवाई न किए जाने और राज्य मंत्रिमंडल से रामपाल सिंह को न हटाने तथा रायसेन जिला पुलिस अधीक्षक जगतसिंह राजपूत, उप जिला पुलिस अधीक्षक साहू और टीआई पंकज दुबे को स्थानान्तरित न किए जाने तथा सीबीआई जांच की मांग नही माने जाने से मध्यप्रदेश रघुवंशी समाज में व्यापक आक्रोश है। अभी तक प्रदेश के 22 जिलों में जिला, तहसील ब्लाक तथा ग्राम स्तर तक कैंडल मार्च निकाले गये, पुतला दहन हुआ और मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन जगह-जगह सौंपे गए। अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा के एक प्रतिनिधिमंडल ने महासभा की बैठक के पूर्व उदयपुरा जाकर प्रीति रघुवंशी के परिजनों व समाज के लोगों से मिलकर रणनीति बनाने पर विचार किया। इस प्रतिनिधिमंडल में कार्यकारी अध्यक्ष पी एस रघु, महासचिव उमाशंकर रघुवंशी, सेवानिवृत्त पुलिस महानिरीक्षक विजय सिंह रघुवंशी, प्रदेश अध्यक्ष अजय सिंह रघुवंशी और विदिशा जिला अध्यक्ष कैलाश सिंह रघुवंशी शामिल थे।

अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा की बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार भोपाल मे जवाहर चौक स्थिति रघुवंशी समाज भवन में रामनवमी कार्यक्रम सादगी के साथ मनाया गया तथा भगवान राम की आरती के कुछ समय पश्चात लोक निर्माण मंत्री रामपाल सिंह का पुतला दहन किया गया। इसके पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष हजारीलाल रघुवंशी और कार्यकारी अध्यक्ष पी एस रघु की अगुवाई में एक रैली निकाली गई जिसमें समाज की मांगों को दोहराया गया। समाज भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में महासचिव उमाशंकर रघुवंशी, सेवानिवृत्त पुलिस महानिरीक्षक विजय सिंह रघुवंशी, सेवानिवृत्त जस्टिस एस एस सिन्हों, बलवंत सिंह रघुवंशी, श्यामसिंह रघुवंशी, यशवंतसिह रघुवंशी, रमेश चौधरी, जयराम सिंह रघुवंशी, संग्राम सिंह रघुवंशी, महेश रघुवंशी तथा युवा संगठन के मनोज रघुवंशी, मुकेश रघुवंशी, राजेंद्र सिंह, एडवोकेट ब्रजबिहारी रघुवंशी, स्वदेश रघुवंशी, राहुल रघुवंशी, अशोक रघुवंशी, अंकित, मुकेश, शिवकुमार, देवेंद्र, दिनेश, सुमति, अमित, पुरुषोत्तम रघुवंशी, विशाल सिंह रघुवंशी आदि उपस्थित थे।

होशंगाबाद जिले के सिवनी-मालवा में रघुकुल युवा संगठन ने दोषियों पर कार्रवाई की मांग को लेकर एक ज्ञापन राज्यपाल के नाम धीरेंद्र सिंह अनुविभागीय अधिकारी, राजस्व सिवनी-मालवा को सौंपा, जिसमें मांग की गई कि गिरिजेश प्रताप सिंह पर प्रीति रघुवंशी को प्रताड़ित कर उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित करने का मामला दर्ज कर शीघ्र गिरफ्तार किया जाए। मंत्री रामपाल सिंह के दबाव के कारण पुलिस दोषियों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं कर रही और आरोपियों को बचाया जा रहा है। यदि आरोपियों को तत्काल गिरफ्तार नहीं किया जाता तो समस्त रघुवंशी समाज एवं रघुवंशी संगठनों को उग्र आंदोलनों के लिए बाध्य होना पड़ेगा, जिसकी जिम्मेदारी पूरी तरह से प्रदेश शासन के मुखिया शिवराज सिंह चौहान एवं प्रशासन की होगी। ज्ञापन देने वालों में एडवोकेट ब्रजमोहन रघुवंशी, अशोक रघुवंशी, प्रवीण रघुवंशी, रणधीर सिंह रघुवंशी, पवन रघुवंशी, दीपक रघुवंशी, अरविंद रघुवंशी, मुकेश पटेल, नीरज रघुवंशी, दीपक रघुवंशी पिपलिया कला तथा रघुकुल युवा संगठन सिवनी-मालवा के सदस्य उपस्थित थे।

रघुवंशी समाज धार द्वारा पीथमपुर में प्रदर्शन कर नगर पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा। इस अवसर पर प्रदेश महासचिव चंदू रघुवंशी, परमेश्वर रघुवंशी, जगदीश रघुवंशी, रतन सिंह रघुवंशी, जगदीश खेड़ा, राजेंद्र पटेल, हरिसिंह पटेल, प्रहलाद पटेल, अमृत रघुवंशी, ब्रह्मानंद रघुवंशी, सुरेश रघुवंशी आदि मौजूद थे।

छिंदवाड़ा में रघुवंशी समाज ने केंडल मार्च निकाला और रामपाल सिंह और उनके बेटे पर एफआईआर दर्ज करने और मंत्रीमंडल से निकालने की मांग की इस अवसर पर बडी संख्या में लोग उपस्थित थे।

पत्रकार को दर्पविहीन दर्पण बनना चाहिए

भोपाल जर्नलिस्ट एसोसिएशन व भोपाल प्रेस क्लब के संयुक्त तत्वाधान में 'सामाजिक सौहार्द और मीडिया की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए वरिष्ठ पत्रकार महेश श्रीवास्तव ने कहा कि पत्रकारिता दर्पण तो है लेकिन यदि पत्रकार दर्पण के दर्प (घमंड) से पीड़ित है तो उसकी पत्रकारिता खत्म होनी शुरू हो जाती है। इसलिए पत्रकारों को दर्प से मुक्त होना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि पत्रकारिता में व्यक्ति कभी भी बूढ़ा नहीं होता। सोशल मीडिया पर उन्होंने कहा कि इंटरनेट ने कई मूक लोगों को बोलना सीखा दिया है लेकिन इसके खतरे भी बढ़ गए है जिसके मन में जो है वह बोलते जा रहे है। जानकारियों के सही गलत के चिंतन के बिना प्रसार और प्रचार किया जा रहा है। इसके पहले 'सुबह सवेरे' के प्रधान संपादन उमेश त्रिवेदी ने कहा कि मीडिया ऐसा विषय है जिस पर हर तरह से बात की जा सकती है। मीडिया हर वक्त कसौटी पर रहता है। उन्होंने कहा कि आज हम वाचाल पत्रिकारिता के दौर से गुजर रहे है। जिसको जो लग रहा है सिर्फ बोल रहा है, जिससे व्यक्ति का विवेक पीछे जा रहा है। तर्क, तेश में बदलकर समाज को जला रहे है। यह सोशल मीडिया पर ज्यादा दिखाई दे रहा है। पत्रकारिता में साधना, समझ और संवेदना की जरूरत है। भोपाल महापौर आलोक शर्मा ने कहा कि सोशल मीडिया की आचार संहिता होनी चाहिए। नई पीढ़ी वरिष्ठ लोगों को अपमानित कर रही है। वह बिना जानकारी के सम्मानिय लोगों पर सवाल खड़े कर रही है। यह सिर्फ नई पीढ़ी ही नहीं हमारे बीच के लोग भी कर रहे है। हम सभी को उनके बीच जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। उन्होंने घोषणा करते हुए कहा कि सोशल मीडिया की आचार संहिता होनी चाहिए। वरिष्ठ पत्रकार महेश श्रीवास्तव के 75वर्ष के होने के उपलक्ष्य एवं पत्रकारिता में योगदान के लिए भोपाल जर्नलिस्ट एसोसिएशन व भोपाल प्रेस क्लब ने उन्हें सम्मानित किया। सम्मानित होने वाले पत्रकारों में रघुकलश के संपादक, सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक और अमृत संदेश के कार्यकारी संपादक अरुण पटेल शामिल हैं।

बासोदा में श्री राम बैंक की पुस्तकों ने बदला अनेकों का भाग्य

गंजबासोदा (सुरेंद्रसिंह रघुवंशी एडवोकेट, उदयपुरा)। श्रीराम-नाम लेखन बैक के अध्यक्ष रघुनाथसिंह रघुवंशी द्वारा प्रतिदिन राम नाम लेखन पुस्तिकाओं का वितरण किया जा रहा है जिसके फलस्वरुप विदिशा सहित गंजबासोदा, ग्यारसपुर, सिरोंज, शमशाबाद, नटेरन, कुरवाई एवं सागर जिले के सीमावर्ती इलाकों में श्रीरघुवंशी के प्रयासों से राम नाम लिखने वाले हजारों की संख्या में बढ़ते जा रहे हैं। प्रतिदिन दस से पन्द्रह हजार बार भगवान श्रीराम का नाम भक्त लिखते हैं, यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन दिन दूना रात चौगुना बढ़ रहा है श्री राम-नाम रुपी वृक्ष। दर्जनों धर्मावलम्बियों का मत है कि जबसे श्रीराम लिखना शुरु किया है तब से मन को सुकून मिल रहा है और सभी प्रकार के गलत काम करने की प्रवृत्ति अपने आप छूटती जा रही है।

गंजबासोदा आकर श्री रघुवंशी से रामनाम लेखन की पुस्तकें ले जाकर लोग लिखते हैं और पुस्तिका भर जाने पर दूसरी पुस्तिकायें ले जाते हैं। इस अभियान में लगे लोगों का कहना है कि पहले हम जुआ, शराब, सट्टा खेलने जैसे समाज विरोधी कार्यो में लिप्त होकर अपना जीवन बर्बाद कर रहे थे जिसके कारण घर-परिवार में हमेशा झगड़ा होता रहता था, लेकिन जब से हमने राम-नाम लेखन पुस्तक पर राम नाम लिखना शुरु किया है तब से हमारे सभी अनैतिक कार्य छूट गए हैं और घर परिवार में भी शांति का माहौल है। अब परिवार में सुख शांति का वातावरण भी बन गया है। अब हमें नियमित रुप से राम नाम लिखने की आदत पड़ गई है। जिस दिन किसी कारणवश हम राम नाम नहीं लिख पाते उस दिन हमें काफी बुरा लगता है और बार-बार हमारा ध्यान उसी ओर जाता है। श्री राम नाम लिखने से हमारी कई मनोकामनाएं भी पूरी हुईं। श्रीराम नाम लेखन बैंक के अध्यक्ष श्री रघुवंशी ने बताया कि इसका मुख्य कार्यालय अयोध्या में है। 24 फरवरी तक लाखों की संख्या में पुस्तकें जमा हो चुकी हैं जिन्हें दो मार्च को अयोध्या हेड आफिस में जमा कर दिया गया है। श्री रघुवंशी पिछले 11 वर्षो से बासोदा शाखा से राम नाम लेखन पुस्तक का वितरण करते रहे हैं। अब तक उनके द्वारा करीब 51 करोड़ राम नाम लेखन पुस्तिकाएं अयोध्या में जमा कराई जा चुकी हैं और अभी लगभग पांच करोड़ पुस्तिकायें एकत्रित कर और भेजी गयी हैं। श्री रघुवंशी ने सभी नागरिकों, महिला धर्मावलंबियों से अपील की है कि इन पुस्तिकाओं को प्राप्त कर राम नाम लिखकर पुस्तिका जमा कराकर धर्म-लाभ लें तथा घर परिवार में सुख-शांति लाने का प्रयास करें।

साहब सिंह रघुवंशी को बधाई

सिलवानी (सुरेन्द्र सिंह रघुवंशी, एडवोकेट)। जनपद पंचायत में पदस्थ लिपिक साहब सिंह रघुवंशी को गणतंत्र दिवस पर उत्कृष्ट कार्य करने पर म.प्र. शासन द्वारा सम्मानित किये जाने पर अखिल भारतीय रघुवंशी क्षत्रिय महासभा के रायसेन जिला अध्यक्ष बाल मुकुन्द रघुवंशी बाबूजी सलैया, ब्लॉक अध्यक्ष गण कृपालसिंह उदयपुरा, महेश पटेल, घनश्याम पटेल पूर्व जिलाध्यक्ष गोविंद नारायण सिंह, चतुर नारायण रघुवंशी आदि ने बधाई दी।

सच्चा साथी

वर्तमान युग विज्ञान का युग है फिर भी मैं किसी आदि-शक्ति में विश्वास करता हूं। आज हम सभी इच्छित भौतिक वस्तुएं प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु इन सबके बावजूद भी हमे किसी सच्चे साथी की आवश्यकता काफी हद तक महसूस होती है। यदि किसी व्यक्ति को जीवन में सच्चा-साथी मिल जाये तो उसका जीवन सफल हो सकता है बशर्ते वह उसे जीवन के हर मोड़ कर उचित राय दे, सभी प्रकार से सहयोगी बने। उसका साथी :मित्रः उसे तन, मन, धन से सहयोग कर वास्तविक अर्थो में उसका ''अपना'' हो।

आज का मानव मात्र अवसरवादी बनकर रह गया है, उसे अपने स्वार्थसिद्धि करने की जुगत में ही देखा जा सकता है। ये संसार ऐसे लोगों से भरा पड़ा है जो केवल झूठा अपनत्व जताकर अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए भोले-भाले लोगों को अपनी कुटिल चाल में फांसकर अपना काम निकालते हैं। अपना उल्लू सीधा करने के बाद वे ऐसे गायब हो जाते हैं जैसे ''गधे के सिर से सींग''। हर आदमी के बस की बात नहीं ऐसे धूर्त लोगों की पहचान करना। हम ऐसे लोगों की बातों में आकर अपने ही मन की शांति भंग करने में सहयोगी बनते हैं।

हम यह भलीभांति जानते हैं कि बिना स्वार्थ के कोई कर्म हम नहीं करते, परन्तु स्वार्थ के साथ-साथ हमें परस्वार्थ का भी ध्यान नहीं भूलना चाहिये। अपने उद्देश्य के लिए दूसरों को झूठे आश्वासन देकर उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिये। समाज में प्रत्येक व्यक्ति एक-दूसरे के साथ किसी न किसी रुप में जुड़ता है, अपना काम एक-दूसरे के सहयोग से निकालता है, परन्तु केवल और केवल अपने कार्य की सफलता के लिए उसकी चापलूसी कर अपने मनमंदिर की मूर्ति को कुंठित कर कोई कार्य नहीं करना चाहिए, नहीं तो हमारी अन्तर्रात्मा ही हमें सदैव कचोटती रहेगी।

मित्रता में कभी अपना स्वार्थ नहीं देखना चाहिये। दोस्ती में कभी कोई छोटा या बड़ा, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब नहीं होता है। सच्चा मित्र भी हमारे पूर्वजन्मों के संस्कारों से ही मिलता है। मेरा मानना है कि यह किसी से एक समय की भेंट से भी संभव हो सकता है और प्रतिदिन मिलने पर भी नहीं। कभी-कभी हमारे प्रतिदिन मिलने से भी लोगों से सम्बंध घनिष्ठता में नहीं बदल पाते जबकि किसी से हम एक बार मिलने पर ही काफी प्रभावित होकर आजीवन संबंध बना सकते हैं। यह केवल हमारे पूर्वजन्म के संस्कारों की ही देन हो सकती है। किसी से थोड़ी बात हो और अपनापन जाग्रत हो जाये, ऐसा कम होता है। यदि अपनापन आत्मीयता में बदल सके तो हम इसे मित्रता का नाम दे सकते हैं। मित्रता करें तो ऐसी जैसी श्रीकृष्ण ने सुदामा से की थी, जिसे सारा विश्व एक उदाहरण के रुप में देखता है। मित्रता परस्पर विश्वास, सहयोग एवं एक-दूसरे के लिये किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार रहना, अपना ही नहीं अपने मित्र का विश्वास जीतना इसमे सहयोगी बनने का आधार होगा। हमें सदैव ही ऐसे मित्र की खोज करते रहना है।

परिस्थितिजन्य मानव

मैं क्या था ? क्या हूं ? शायद मेरे सिवाय अन्य किसी को वास्तविकता का पता नहीं है। मनुष्य को अपना जीवन जीना पड़ता है, यह ईश्वर प्रदत्त निधि है। हमें इसका सम्मान करना चाहिये। परन्तु कभी-कभी ये जीवन एक अभिशाप सा लगने लगता है। जब हम दुविधाओं के भंवरजाल में फंस जाते हैं तो हमें अपने-आपको ससम्मान जीवित रखने के लिए ऐसे कार्य करने पड़ते हैं जिन्हें हमने अपनी पूर्व जिंदगी में कभी न किये हों और न ही कभी करने का प्रयास ही किया हो। कुछ कार्य ऐसे होते हैं जिन्हें हमें आत्मसम्मान के विरुद्ध भी करना पड़ता है। इसे हम अपनी मजबूरी भी कह सकते हैं। हमें जीवन में कुछ ऐसे कार्य करने पड़ जाते हैं जिन्हें करने के पश्चात हमारी अन्तर-आत्मा हमें कचोटती रहती है। मैंने भी अपनी जिंदगी में ऐसे कार्य किए होंगे मैं मानता हूं जिन्हें करने के पूर्व एवं पश्चात मेरी आत्मा ने मुझे कोसा होगा।

हम परिस्थितियों के दास बन जाते हैं और इन्हीं के वशीभूत होकर ऐसे कार्य कर जाते हैं जिन्हें हम सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते। मनुष्य को परिस्थितियों का दास नहीं बल्कि उसे परिस्थितियों को ही अपना दास बनाने का प्रयास करना चाहिये। यह कोई साधारण बात नहीं है परन्तु हमें जितना संभव हो सके इनके वशीभूत होने से बचना होगा। मैं स्वयं इन परिस्थितियों से लड़ने में असफल रहा, मैंने काफी संघर्ष किया परन्तु इनसे पार पाने में असमर्थ रहा।

मुझे भी अपने जीवन में अनेक कटु अनुभवों से दो-दो हाथ करने का अवसर प्राप्त हुआ है, काफी संघर्ष किया है, विषम परिस्थितियों से जुझने में। वैसे हम जानते हैं कि मनुष्य की उत्पत्ति ही संघर्षों की देन है। मानव को पग-पग पर संघर्ष करना पड़ता है बगैर संघर्ष के हम शायद ही कोई कार्य सहजता से कर सकें। चलने फिरने, खाना पकाने, भोजन करने में यहां तक कि भोजन पाचन में भी हमारे शरीर के आंतरिक कलपुर्जो को भी संघर्ष करना पड़ता है। अतः इसे हम सहजता से ही लें।

इस जगत में संघर्ष या घर्षण के बिना मानव-जीवन गतिशील ही नहीं रहेगा। इस संसार में मनुष्य किसी न किसी रुप में सघर्ष से जुड़ा हुआ है। ऐसे अनेकों उदाहरण हमें मिल जायेंगे जहां हम बिना संघर्ष के आगे कदम ही नहीं बढ़ा सकते। अतः संघर्षो से डरना नहीं बल्कि इनके सहारे ही हम उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर अपने भविष्य को उज्जवल बनाने का भरसक प्रयास करें। मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे अपने जीवन में परिस्थितियों से लड़ने की क्षमता प्रदान करे तथा मुझे परिस्थितियों का दास नहीं इनका राजा बनाने की कृपा करें।

-इंजी. शम्भू सिंह रघुवंशी,
मो.9425762471

गुमराह विद्यार्थी

किसे हम गुमराह कर रहे है?
किसे हम हमराज कर रहे हैं?
हम, हमें ही गुमराह कर रहे हैं!
हम, हमें ही हमराज कर रहे है।
हाँ! आज का विद्यार्थी हूँ मैं।
उद्देश्य कही ढूंढ रहा हूँ मैं!
नहीं बनाया ध्येय है मैंने
नहीं बनाया उद्देश्य हैं मैंने
लापरवाही तो जैसे है मेरी प्रिय साथी
अनसुनी तो जैसे है मेरी प्रिय साथी
रंगबिरंगी फिल्मों की दुनियां मुझे पुकारती है
ऊटपटांग हेअर स्टाइल की दुनिया मुझे पुकारती हैं
चैटींग-वैटींग से मैं अपना मन बहलाऊँ
मम्मी-पापा से मैं नई सीम डलवाऊँ
देर रात तक खूब चलाऊँ इंटरनेट मैं
भूल कर सब कुछ चलाऊँ यू-टयूब मैं
मम्मी-पापा का हूँ मैं बड़ा प्यारा/प्यारी
जो भी मांगू मैं, पा जाता हूँ मैं
मम्मी-पापा का हूँ आँख का तारा
टू-व्हीलर का मैं दिवाना लेकिन
न लगाऊँ हेलमेट मैं .....
बन जाएं कितने ही कानून सारे
बन जाएं स्कूल में नियम सारे
सब कुछ को मैं तो धत्ा बताता
सब कुछ को मैं तो ठेंगा दिखाता
परीक्षाएं आती है आती रहे
रिजल्ट खुलते हैं खुलते रहें
मैं तो हूँ विद्यार्थी सिर्फ नाम का
स्कूल जाना-आना तफरी सा लगे
पास होऊं या फेल मुझे क्या करना!
जिंदगी तो ऐसे ही गुजारूंगा मुझे क्या करना।
जिंदगी में आगे किसने देखा हैं क्या?
अभी तो मम्मी-पापा का प्यार हैं
अभी तो उनका पैसा अपार हैं
बिताता रहूंगा जितने हो बिताना दिन
अगर ज्यादा सख्ती की तो शिक्षक ने
अगर ज्यादा सख्ती की मम्मी-पापा ने
तो उनको तारे दिखा दूंगा
खुदखुशी का ड्रामा दिखा दूंगा
एक लंबी चिठ्ठी में अपने कर्मों का
चिठ्ठा न लिख उन्हें जिम्मेदार ठहरा दूंगा
मैं तो गुमराह हूँ, सब को गुमराह कर दूंगा।

श्रीमती सुषमा रघुवंशी
प्राचार्य
कमला नेहरू हा.से. स्कूल (सी.बी.एस.ई.)
कमला नगर, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-03

चुनौती

दे तभी चुनौती विपदा को
प्रकृति की हर कट्टरता को
कारवां बढ़ाता गाता हूं
पाता क्या और गंवाता हूं
यह मृत्यु देश की गश्ती है।
नहीं जहां दिखता है स्थल
नीला नभ दिखता सिन्धु प्रबल
गहराई का आभास नहीं
लहरों का नर्तन होता है
पछुआ का गर्जन होता है
चंदा से कुछ कम प्यास नहीं
लहरों का नाव खिलौना जब
यत्नों में मानव बौना तब
पर रोने का आभास नहीं
ऐसे में गा उठती हिम्मत
हर हलचल में मेरा जीवट
मैं लहरों पर चढ़ जाता हूं
उन पर आगे बढ़ जाता हूं
क्या हुआ जो नई कश्ती है।

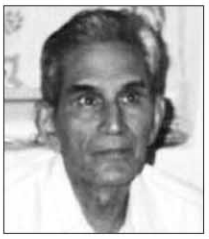

डॉ. देवकीनंदन जोशी
संपर्क-मो. 8720031001,
फोन-0755-2557428

ज्योतिष्य कलश

ज्योतिर्विद विजय मोहबे
ई-2/333, अरेरा कालोनी, भोपाल म.प्र.
मो. 9827331388

अप्रैल माह- 2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता.12 वरुथिनी एकादशी व्रत, ता. 13 प्रदोष व्रत, ता. 14 शिव चतुर्दशी व्रत, ता. 16 सोमवती अमावस्या, ता. 18 अक्षय तृतीया, ता. मोहिनी एकादशी, ता. 27 प्रदोष व्रत।

मेष- मनोदशा अनुकूल रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को अध्ययन में सफलता प्राप्त होगी। वाहन आदि चलाने में सावधानी बरते। स्त्री सुख उत्तम। न्याय के क्षेत्र में थोड़ी कठिनाई रहेगी। सार्वजनिक उपक्रम के क्षेत्र में उन्नति के अवसर बनेंगे।

बृषभ- वस्तु विशेष का लाभ होगा। नई उपलब्धियां प्राप्त होंगी। यात्रा के अनायास योग बनेंगे। साझेदारी में व्यापार प्रारंभ करने से बचें। स्त्री वर्ग को नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। कार्य विस्तार पर धन खर्च होगा।

मिथुन- योजनाओं को पूरा करने में परिश्रम लगेगा। मित्रों का कार्यों में सहयोग मिलेगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च होगा। जाने-अनजाने में की गयी भूल का एहसास होगा। कृपया समय रहते ऐसे कार्यों को सुधार लें।

कर्क- विद्यार्थियों को शिक्षा-परीक्षा पर पूरा ध्यान देना पड़ेगा। व्यर्थ की बातों में समय नष्ट न करें। प्रेम-पात्र से दूरी बढ़ेगी। बैंक-बीमा इत्यादि में जमा रकम की प्राप्ति होगी। रुके हुए कार्य बनेंगे।

सिंह- अहंकार से बचें। स्वास्थ्य में ढुलमुलता रहेगी। पुराने मित्र से मुलाकात होगी। कामकाज सुचारु रुप से चलेंगे। कोर्ट-कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। ससुराल पक्ष में सम्मान बढ़ेगा। सुखद समाचार मिलेगा।

कन्या- मानसिक परिश्रम ज्यादा करना पड़ेगा। व्यापार अथवा व्यवसाय में परिवर्तन करने से बचें। समय अनुकूल नहीं। पारिवारिक जवाबदारी बढ़ेगी। विवाहयोग्य कन्या के संबंध में बात चलेगी। अनायास घर में शुभ-मंगल प्रसंग बन सकता है।

तुला- अतिथि आगमन से परेशानी बढ़ेगी। खर्च की अधिकता रहेगी। कामकाजी महिलाओं को अधिकारी वर्ग की प्रताड़ना सहनी पड़ेगी। दीन-दुखियों की सेवा करने से लाभ मिलेगा। विद्यार्थियों को कठिन पेपर्स आयेंगे। पढ़ाई पर ध्यान दें।

वृश्चिक- आप कार्यों पर ध्यान दें। समाज में निंदा होने का भय रहेगा। अतिरिक्त आय हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। प्रवास में सफलता मिलेगी। कार्य विस्तार के अवसर बनेंगे। भाई-बंधुओं का सहयोग मिलेगा। पत्र की प्राप्ति होगी।

धनु- राजनीति में संबंधों को मजबूत बनाने से लाभ मिलेगा। आमदनी के नये स्त्रोत बनेंगे। कार्य क्षेत्र में नये लोगों से मुलाकात लाभदायक रहेगी। विद्या के क्षेत्र में उन्नति के योग बनेंगे। स्त्री वर्ग को स्वास्थ्य की चिंता रहेगी।

मकर- पैतृक सम्पत्ति को लेकर विवाद उत्पन्न हो सकते हैं। भाई-बंधुओं से वैचारिक मतभेद बढ़ेंगे। सामाजिक कार्यों पर धन खर्च होगा। नेतृत्व की भावना रहेगी। आपकी कुछ अनियमितताओं के कारण कार्य में विलम्ब होगा।

कुंभ- पत्नी से वैचारिक मतभेद दूर होंगे। परिवार में सुखद वातावरण बनेगा। आय के स्त्रोत को लेकर कुछ चिंता रहेगी। किसी की भी बातों पर जल्दी विश्वास न करें, अन्यथा हानि होगी। संतान के कार्यों पर धन खर्च होगा। सद्व्यवहार का लाभ मिलेगा।

मीन- मानसिक रुप से स्वयं को तटस्थ रखें, व्यर्थ दूसरों के विवाद में दखल न दें। नई जिम्मेदारियां वहन करनी पड़ेंगी। युवा वर्ग को इन्टरव्यू/परीक्षा आदि में सफलता के योग बनेंगे। व्यापार आदि में सोच समझकर निर्णय लें जल्दबाजी न करें।

मई माह- 2018

प्रमुख तीज त्यौहार- ता. 3 गणेश चतुर्थी व्रत, ता. 11 अचला एकादशी व्रत, ता. 13 प्रदोष व्रत,, ता. 18 विनायकी चतुर्थी, ता. 24 गंगा दशहरा, ता. 25 कमला एकादशी।

मेष- आपके जीवन में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव के संकेत मिलते हैं। व्यापार उद्योग करने वालों को धन-लाभ होगा। विद्यार्थी वर्ग को प्रेरणादायी संयोग बनेंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से कष्ट हो सकता है। दूसरों को उधार/ऋण देने से बचें।

वृषभ- प्रेम-प्रसंग में खुलासा होने का भय रहेगा। नये वाहन खरीदने की योजना बनेगी। साइंस की रुचि वालों को सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यप्रणाली में आलस्य बाधक बनेगा। मित्रों का समागम होगा। परिश्रम की अधिकता रहेगी।

मिथुन- प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी पर पूर्ण ध्यान दें। जमीन जायदाद के कार्यों पर धन खर्च होगा। अधिकारी वर्ग से संयम बनाकर चलें, व्यर्थ विवाद की संभावना रहेगी। कोई नई सूचना प्राप्त होगी।

कर्क- पारिवारिक चिंताओं में वृद्धि होगी। किसी भी अनुबंध पर बिना सोचे विचारे हस्ताक्षर न करें। भावुकता से बचें। अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने से लाभ मिलेगा। स्त्री वर्ग में धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

सिंह- कार्य विस्तार की योजना बनेगी। शत्रु वर्ग षडयंत्र करेंगे।

अपनी योजनाओं को गोपनीय रखें। नये संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। आपका मनोबल ऊंचा रहेगा। भौतिक वस्तुओं के क्रय पर धन खर्च होगा। दूसरों की निंदा से बचें।

कन्या- नौकरी व्यवसाय में परिवर्तन के योग। स्थानान्तरण भी संभव है। राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति में बाधायें आयेंगी। समय थोड़ा प्रतिकूल है। आत्मसम्मान की भावना रहेगी। अनायास घर में कोई मंगल-प्रसंग बनेगा।

तुला- शैक्षणिक योग्यता का लाभ मिलेगा। अपने अधीनस्थों से मिलकर कार्य करें। वाहन आदि का सुख रहेगा। पूंजी निवेश करने से बचें, अन्यथा हानि होगी। परिवार में नये सदस्य का आगमन होगा।

वृश्चिक- पद-प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। मनोरंजन के अवसर बनेंगे। कार्य सुचारु चलेंगे। यात्रा आदि में समय का ध्यान रखें। भौतिक वस्तुओं की खरीददारी में धन खर्च होगा। प्रेमिका से मिलन होगा।

धनु- कानूनी कार्यवाहियों में अड़चन रहेगी। जमीन-जायदाद के कार्य रुकेंगे। निकट-पास की यात्रा संभव है। व्यर्थ क्रोध व उत्तेलना से शारीरिक कष्ट संभव है। दूसरे के आश्वासन से कार्ययोजना पूर्ण होगी।

मकर- पराक्रम व बुद्धि चातुर्य से आप किसी बड़ी समस्या का निदान कर लेंगे। स्त्री वर्ग को तनाव रहेगा। अधिकारी पक्ष से विवाद संभव है। व्यवसायिक कार्यों में विस्तार की योजना बनेगी।

कुंभ- खानपान पर संयम रखें। स्वास्थ्य को लेकर परेशानी हो सकती है। ससुराल पक्ष से सहायता प्राप्त होगी। आप के नवीन साधनों हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। समारोह में शिरकत करने के अवसर प्राप्त होंगे।

मीन- व्यापारिक वर्ग में उत्साह रहेगा। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। घरेलू समस्याओं का समाधान होगा। किसी के आतिथ्य पर धन खर्च होगा। परिवार में किसी मंगल कार्य की योजना बनेगी। भ्राताओं का सहयोग रहेगा।

जून माह- 2018

प्रमुख तीज-त्यौहार- ता. 2 गणेश चतुर्थी व्रत, ता. 10 कमला एकादशी, ता. 11 प्रदोष व्रत, ता. 16 रंभा तीज, ता. 22 महेश नवमी, ता. 24 निर्जला एकादशी, ता. 27 वट पूर्णिमा व्रत।

मेष- कुटुम्बीय सुख में वृद्धि होगी। कुंवारी कन्याओं का विवाह तय होगा। नये लोगों से मेल-मिलाप होगा। विद्यार्थी वर्ग की परीक्षा हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। व्यर्थ समय नष्ट करने से बचें।

वृषभ- प्रभुत्वशाली कार्यों, भोग-एश्वर्य पर धन खर्च होगा। पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। बुद्धि भ्रमित रहेगी। व्यापार में हानि का योग। लेन-देन में सर्तकता बरतें, सब्र से काम लें।

मिथुन- व्यर्थ के आरोप या लांछन लग सकते हैं। दूसरों के काम में दखल देने से बचें भ्रमण-मनोरंजन के अवसर बनेंगे। नई मित्रता का लाभ मिलेगा। वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। दुर्घटना का भय रहेगा।

कर्क- उधार/ऋण चुकाने में धन खर्च होगा। संतान के स्वास्थ्य को लेकर भी चिंता बढ़ेगी। बेरोजगारों को रोजगार के अवसर बनेंगे। यात्रा आदि में सावधानी बरतें। कष्ट से बचें।

सिंह- स्वार्थ की प्रबलता रहेगी। किन्तु कार्यो में जल्दबाजी से कार्य बिगड़ेगे। किसी प्रेरणादायी पुरुष से भेंट होगी। आत्मशांति प्राप्त होगी। वाहन आदि का लाभ मिलेगा। संचय करने की प्रवृत्ति रहेगी।

कन्या- सामाजिक कार्यो में समय देने से लाभ। नई रिश्तेदारियां बनेंगी। किसी कार्य संपादन हेतु बुजुर्ग व्यक्ति की सलाह उपयुक्त रहेगी। अंधविश्वास से बचें। असमंजसता के कारण आप गलत निर्णय ले सकते हैं।

तुला- पारिवारिक समस्याओं मे कलह करने से बचें। आपसी समझदारी से काम लें। आय-व्यय बराबर रहेंगे। धीरे-धीरे आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आत्मसम्मान बढ़ेगा। पत्र प्राप्त होगा।

वृश्चिक- स्वभाव में थोड़ी उद्विग्नता रहेगी। व्यापार में अनुबंधों का पालन करने से लाभ होगा। युवा वर्ग में रोजगार के प्रति आक्रोश रहेगा। मन आंदोलित रहेगा। साहित्य, कला में रुचि रखने वालों को सम्मान मिलेगा।

धनु- राजनीतिज्ञ लोगों को शासन-सत्ता का लाभ मिलेगा। चोट आदि का भय रहेगा। खेलकूद में रुचि रखने वालों को अच्छे लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। आर्थिक व्यवस्था में सुधार होगा।

मकर- कार्यक्षेत्र में आपको चुनाव करने में असमंजसता रहेगी। पारिवारिक विवाद हल होंगे। जमीन-जायदाद के क्रय करने की योजना को टालें। विरोधी पक्ष सक्रिय रहेगा। अपनी योजनाओं को गुप्त रखें।

कुंभ- संतान के कार्यो पर धन खर्च होगा। किसी धार्मिक यात्रा की योजना बनेगी। स्त्री वर्ग को नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति होगी। किसी दूर गये मित्र या रिश्तेदार का समाचार प्राप्त होगा।

मीन- स्त्री वर्ग में प्रसन्नता व हर्ष का उल्लास रहेगा। घर में कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा। व्यापारी वर्ग में व्यापार में परिवर्तन के योग बनें। दैनिक कार्यो में विघ्न रहेंगे।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक अरुण पटेल द्वारा प्रियंका ऑफसेट, 25-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल से मुद्रित कर ई-100/41, शिवाजी नगर, भोपाल, मप्र-462016, से प्रकाशित। संपादक- अरुण पटेल

फोन न.0755-2552432, मो. 9425010804, ईमेल: raghukalash@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। RNI No. MPHIN/2002/07269

शुभकामनाएं...

बधाई... आभार...

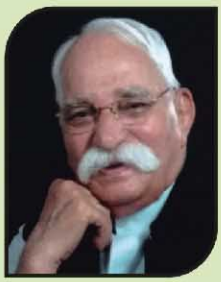

हजारीलाल रघुवंशी
राष्ट्रीय अध्यक्ष

पी.एस. रघु
राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष

चौ. चन्द्रभान सिंह
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

उमाशंकर रघुवंशी
महासचिव

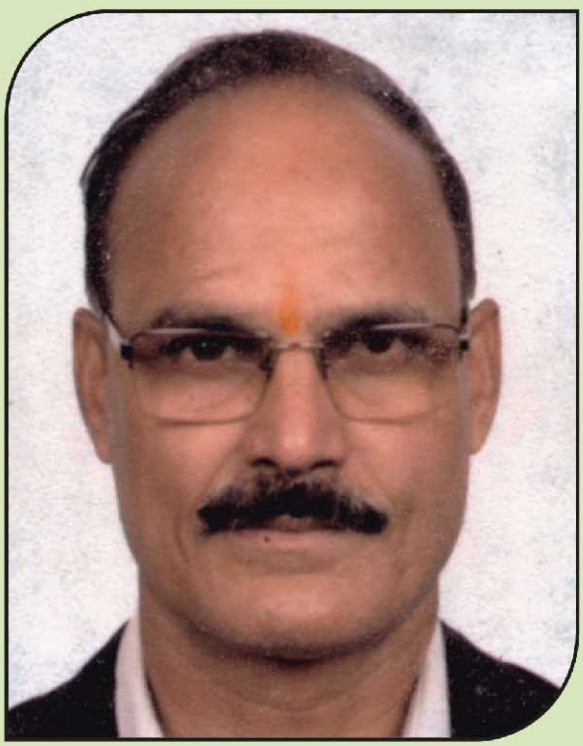

शिवचरण सिंह रघुवंशी
कोषाध्यक्ष

अजय सिंह रघुवंशी
प्रदेश अध्यक्ष

अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा
के विदिशा जिला अध्यक्ष पद पर

कैलाश रघुवंशी

की नियुक्ति पर
बधाई एवं शुभकामनाएं

कैलाश रघुवंशी

जिला अध्यक्ष, विदिशा

सौजन्य : अखिल भारतीय रघुवंशी (क्षत्रिय) महासभा, जिला विदिशा

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान
हर माह, 9 तारीख

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान

हर महीने की 9 तारीख़ को गर्भवती माँ को दिलाएं अहसास कि वो है सबसे ख़ास

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत –

- नि:शुल्क जांच और उपचार के लिये गर्भवती महिला को 9 तारीख को शासकीय अस्पताल लेकर आये।
- यह सुविधा सभी शासकीय जिला चिकित्सालय, सिविल अस्पताल एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर नि:शुल्क उपलब्ध है।
- इस दिन शासकीय एवं निजी डॉक्टरों द्वारा गर्भवती महिलाओं की नि:शुल्क चिकित्सकीय एवं प्रयोगशाला जांच की जाती है।
- जांच में खतरे के लक्षण पाये जाने पर महिला को तत्काल उचित इलाज दिया जाता है।

ख़तरे के लक्षण

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

D-83051/18

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2017

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
मध्यप्रदेश शासन द्वारा जनहित में जारी